* ओउम् *

खण्डन मण्डन ग्रन्थमाला पुष्प सं० ८२

मेरठ का

जंगली कुत्ता (गर्ग)

A Wild Dog Of Meerut (GARG)

लेखक–

('खण्डन-मण्डन ग्रन्थमाला' के समस्त ग्रन्थों के प्रणेता)

आचार्य डा० श्रीराम आर्य

कासगंज (एटा) उ० प्र०

प्रकाशक

वैदिक साहित्य प्रकाशन

कासगंज (उत्तर प्रदेश) भारतवर्ष

दयानन्दाब्द १६०

प्रथमवार] सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५ [मूल्य ३)७५

११०० प्रतियां सन् १९८४

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
वर्गीकरण नम्बर 799 .....
पु. परिग्रहण क्रमांक .....

अधि० संख्या 3571
विषय ... वे-पु-१४६ ... 3576
परिग्रहण क्रमांक 799

भूमिका

संसार के सभी मतों के विद्वानों का सदैव यह ढंग रहा है कि जिन अन्य मतों का विद्वानों से उनका सैद्धान्तिक मतभेद रहता है, वे उनके सिद्धान्त पक्ष को सामने रखकर उस पर अपने विचार प्रमाण तर्क या मतभेद शिष्ट भाषा में प्रस्तुत करते हैं। उन पर विपक्ष भी विचार करता है, पाठकों को भी शास्त्रीय वाद-विवाद में बहुत कुछ दोनों ओर की बहस में समझने तथा अन्त में परिणाम देखकर किसी निर्णय पर पहुँचने में मदद मिलती है। पर जिन लोगों का स्वाध्याय नहीं होता है और चिढ़ कर विपक्ष [illegible] पूर्वक अपशब्द बोलने वा लिखने बैठ जाते हैं, समझदार लोग उसके पक्ष को दुर्बल जान लेते हैं।

हमारे देखने में पचासों [illegible] पिछले लगभग ६० वर्ष में आये हैं, पर एक भी असभ्यतापूर्ण व्यवहार का दृष्टान्त हमको शास्त्रार्थों वा ग्रन्थों में नहीं मिला है। हाल ही में एक पुस्तक किसी राजेन्द्र कुमार गर्ग-मेरठ कालिज के अध्यापक की लिखी मिली है जिसमें आर्य समाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द जी को केवल गन्दी गालियाँ दी गई हैं, उनकी किसी भी मान्यता पर युक्ति-तर्क-प्रमाण के आधार पर विचार नहीं दिया गया है। पुस्तक लेखक अपने गुण्डा स्वरूप में सामने आ गया है। उसने जैनमत-बौद्धमत-वैष्णव-शैव-शाक्त ब्राह्म समाज-नानक-कबीर-ईसाई व मुसलमानों के मत की किसी भी पुस्तक को नहीं देखा है तथा उन सम्प्रदायों पर सत्यार्थ प्रकाश की समालोचना देखकर ऋषि दयानन्द को गन्दी गालियाँ देने बैठ गया है।

जबकि इसको चाहिये था कि सत्यार्थ प्रकाश में दिये उद्धरणों का खण्डन पहिले करता जिनको गलत बताते हुए स्वामी जी ने विभिन्न

मत वालों को झाड़ बताई है। पर उन प्रमाणों का खण्डन कर सकना इसके वश की बात नहीं थी। द० गो० पु० नाम की पुस्तक का उत्तर देना आवश्यक समझ कर यह पुस्तक लिखी गई है। इसमें हमने विभिन्न मतों पर स्वामी दयानन्द जी महाराज की समीक्षा का स्पष्टीकरण किया है जिससे पाठकों को उन २ मतों की स्थिति की जानकारी मिल सकेगी तथा सत्य क्या है यह पाठक स्वयं देख सकेंगे। हमारा यह उत्तर शठे शाठ्यम की नीति पर आधारित है।

पौराणिकों की यह विशेषता रही है कि उन्होंने किसी भी ऋषि मुनि को बिना गाली दिये बिना झूठे लाँछन लगाये नहीं छोड़ा है। वशिष्ठ को रण्डी से, व्यास जी कैवर्ती से, पाराशर श्वपाकी से उल्लू से कणाद ऋषि, तोती से शुकदेवजी, हिरणी से श्रंगी ऋषि, नाव चलाने वाली शुद्रा से मन्दपाल मुनि, माण्डव्य मुनि मैंढकी से पैदा हुए लिखा है। (भविष्य पु०)। सारे ही देवताओं को व्यभिचारी शिवपुराण में घोषित कर रखा है। विष्णु के सभी अवतार केवल व्यभिचार करने के ही लिए हुए थे, यह धर्म संहिता में लिखा है। शिवजी की रण्डीबाजी, दारुवन में ऋषि पत्नियों से व्यभिचार, दैत्य पुत्र आडि से शिवजी का अप्राकृतिक व्यभिचार की कथायें विस्तार से शिव पुराण व मत्स्य पुराण में लिखी हैं। ऐसी कोई महान हस्ती नहीं छोड़ी गई जिसे मूर्ख पौराणिकों ने मिथ्या असम्भव कलंक न लगाये हों। संसार के अन्य मतवादी अपने पतित व्यभिचारी पूर्वजों को ब्रह्मचारी-चरित्रवान साबित करने में लगे हैं, पर धूर्त गुण्डे अपने पूर्वजों को महा पतित बताने में लगे हैं। इस नालायक ने ऋषि दयानन्द जी महाराज को शताधिक अति नीच अपशब्दों से सम्बोधित किया है। मेरठ कालेज का यह शान है कि उसमें ऐसे महापतित चरित्रहीन व्यक्ति भी अध्यापक बन सकते हैं जो विद्यार्थियों को चरित्र भ्रष्ट बनाने का काम करते हैं। हम विपक्षी गर्ग को गन्दी गालियों को यहाँ लिखकर अपनी पुस्तक को कलंकित नहीं करना

चाहते हैं। पर चेलेञ्ज देते हैं कि जिस किसी सम्प्रदायवादी में साहस हो और पाण्डित्य का गर्व हो वह शास्त्रार्थ के क्षेत्र में आर्य समाज के सामने उतरने का और आर्य समाज की मान्यताओं का खण्डन करने का साहस दिखावे। हम उसके सम्प्रदाय की पूरी बखिया उधेड़ देनेको तैयार हैं। अवतारवाद हो या मूर्ति पूजा हो, गीता हो या पुराण हो, कुरान हो या बाइबिल हो, जैनमत हो या शैव; शाक्त, वैष्णवादि मत मतान्तर हों हमारा दावा है कि सभी गलत हैं। हमने इन सभी का खण्डन अपनी पुस्तकों में किया है। कोई माई का लाल आज तक भी उत्तर नहीं दे सका है। विपक्षी गर्ग तो पूरा मूर्खराज है, उसे तो लिखने की भी तमीज नहीं है, और न वह साहित्यिक शिष्टाचार को भाषा लिखने की योग्यता रखता है और इसीलिए मेरठ कालिज में नौकर है। वरना किसी चटशाल में भी ऐसे जाहिल को कोई चपरासी भी नही रखता। हम किसी भी विपक्षी की योग्यता सिद्धान्त विषय में देखना चाहते हैं।

हम पाठकों से साग्रह निवेदन करेंगे कि वे सत्यार्थ प्रकाश को ध्यान पूर्वक पढ़ें और देखें कि भारतीय वैदिक आर्य सभ्यता, सदाचार व धर्म को नष्ट व बदनाम करने में विभिन्न सम्प्रदायवादियों की गलत मान्यताओं व आचरणों पर ऋषि दयानन्द जी महाराज की समीक्षा कितनी सही व सप्रमाण तथा समयोचित रही है। इसी का परिणाम है कि आज कुरान और बाइबिल के अनुवादों की शैलियां बदल दी गई हैं हिन्दू व जैन सम्प्रदायों में भी संशोधन किये जारहे हैं। गलत बातों को समझदार मानने को तैयार नहीं है। विपक्षी सड़ातनी है वह गाली भी दे सकता है, विष भी दे सकता है छुरा भी मार सकता है। पर कोई आर्यसमाजी इस जैसा व्यवहार विपक्ष से नहीं कर सकता है। दोनों की सभ्यता में बड़ा अन्तर है।

हम विपक्षी की सभी गालियां जो उसने स्वामी महाराज को अपनी गन्दी पुस्तक में दी हैं ज्यों की त्यों उसको वापिस करते हैं

ताकि वह उनका प्रयोग अपने मान्य देवताओं अवतारों पूर्वजों के लिए कर सके।

गर्ग शब्द का अर्थ भी गर=विष होता है। गर्=गाना, गाने वाला अर्थात् जहरीली बातें बकने वाले धूर्त को गर्ग कहते हैं। विपक्षी भी गर्ग होने से यथा नाम तथा गुण अपनी गन्दी किताब से साबित है। गर्ग से एक बात और भी कहनी है कि जब तुम किसी भी सम्प्रदाय के किसी भी सिद्धान्त वा मान्यता का समर्थन नहीं कर सके हो जिसका सत्यार्थ प्रकाश में खण्डन किया गया है तो केवल गालियां देने को किताब लिखने क्यों बैठ गये? क्या इससे यह स्पष्ट नहीं है कि तुम बज्रमूर्ख हो, तुमको आता जाता कुछ नहीं है, गाली चिढ़कर देना ही जानते हो। कोई भी विद्वान पाठक तुम्हारी गन्दी किताब पढ़ कर क्या सीखेगा. उसमें क्या सामग्री है? ऐसी कमीनी हरकत कोई मूर्ख भी नहीं करेगा जैसी तुमने की है? हर पाठक पुस्तक लेखक से कुछ सीखने की इच्छा अच्छी बात की रखता है न कि गालियां पढ़ने की।

हमने भी ८२ पुस्तकें लिखी हैं, पर गाली किसी भी पुस्तक में नहीं दी है। सारे विद्वानों में हमारा साहित्य बहुत प्रिय है।

विपक्षी द्वारा ऋषि दयानन्द जी महाराज तथा आर्य समाजियों के लिये लिखी गई गन्दी गालियों के उत्तर में हमको इस पुस्तक में विपक्षी 'गर्ग' के लिए अनेक स्थानों पर कटु शब्दों का प्रयोग करना पड़ा है जिसके लिये हमें खेद है, पर हम वैसा लिखने को विवश हैं। क्योंकि विपक्षी बहुत असभ्य व्यक्ति है। ऐसे व्यक्ति की हम कोई प्रतिष्ठा नहीं कर सकते हैं पर विपक्षी विद्वान सभ्य पुरुष का सदैव समादर करेंगे।

श्रीराम आर्य
कासगंज (एटा) उ० प्र०
२४-८-८४

जैनमत

जैनमत के सम्बन्ध में सत्यार्थ प्रकाश के द्वादश समुल्लास में विस्तार से खण्डन प्रस्तुत किया गया है जिसमें से एक भी प्रमाण व तर्क का कोई विपक्षी जवाब नहीं दे सका है। विपक्षी ने भी कोई तर्क या प्रमाण नहीं छुआ है। संसार का कोई भी जैनी उस पर कलम उठाने का साहस नहीं कर सका है। फिर भी धूर्त 'गर्ग' ने केवल समीक्षा के शब्दों को लेकर स्वामीजी को गन्दी गालियाँ दी हैं। यहाँ हम उनके कुछ मुख्य आक्षेपों का जवाब देते हैं। लेख से स्पष्ट है कि उसने जैन धर्म को न तो समझा है और न कोई ग्रन्थ उसका पढ़ा है। फिर भी अपना पागलपन दिखाने से बाज नहीं आया है।

अनन्त विश्व के कण कण में प्रतिक्षण होने वाली नियमवद्ध वैज्ञानिक क्रियायें अपने कर्ता की सर्वव्यापकता, बुद्धिमत्ता का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। कोई मूर्ख यदि फिर भी न माने तो उसको अज्ञानी ही कहा जावेगा। जहाँ संयोग और वियोग होता है वह किसी काल विशेष में होता है अतः संयोग जन्य पदार्थ सादि होता है अनादि नहीं। जो सादि होगा वह सान्त भी होगा। जहाँ कहीं संयोग होगा उसका कभी वियोग भी होगा—विनाश भी होगा इसी प्रकार सूर्य चन्द्र पृथ्वी आदि सम्पूर्ण जगत परमाणु जन्य होनेसे कभी उत्पन्न हुआ था, उसका उत्पन्न कर्ता भी होना चाहिये। जब उसके परमाणुओं का वियोग होगा तो विनाश भी होगा। इस सम्पूर्ण जगत के पदार्थों की रचना-स्थायित्व एवं विनाश में अन्दर से वैज्ञानिक नियम कार्य करते स्पष्ट दीखते हैं। यह उसके कर्ता की व्यापकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। नीम के पत्तों में एक जैसी बनावट, पत्तों में अनेक गुणयुक्त रस होना क्या यह सब बिना चैतन्य ज्ञानवान सत्ता के होता रहता है?

जो जैनी लोग ईश्वर वा जगत का कोई कर्ता नहीं मानते हैं वे अज्ञानी हैं उनकी अज्ञानता पर आक्षेप ठीक ही दिये गये हैं। कार्य जगत बिना कर्ता के नहीं बन सका था।

जैनी दो प्रकार के जीव मानते हैं—(१) भव्य, जिनकी मोक्ष हो सकेगी (२) अभव्य, जिनको मोक्ष कभी नहीं होगी। जो भव्य जीव कभी मल विक्षेप से युक्त होकर दीपक की ज्योति के समान सीधे ऊपर उठे चले जाते हैं और आकाश में स्थित कल्पित ४५ लाख योजन लम्बी चौड़ी अर्ध चन्द्राकार शिला पर जाकर स्थित हो जाते हैं वही उनके मत में ईश्वर माने जाते हैं। जीव स्वयं एकदेशीय है, मुक्त होने पर भी एकदेशीय ही रहेगा, सर्वव्यापक नहीं बन सकेगा। सभी तीर्थंकर जीव थे, जीव ही रहेंगे केवल जैनमत में उनको उपाधि ईश्वर की मिल जाती है। स्वामीजी ने उनको एक देशीय तथा जीव से जैनी परमेश्वर बनना ठीक ही लिखा है। एक देशीय जीव सर्व व्यापक तथा सर्व व्यापक एकदेशीय कभी नहीं बन सकता है।

नियमपूर्वक क्रिया अथवा ज्ञानपूर्वक कार्य बिना कर्ता के नहीं हो सकता है। उपादान कारण को कर्ता रूप में परिणित करना कर्ता की अपेक्षा रखता है, चाहे घर में हो या विश्व में हो। दो प्रकार के कार्य होते हैं. एक बाहर से बनाना जो जीवों के कार्य क्षेत्र में आता है दूसरा अन्दर से पदार्थों का विकसित वा निर्माण होना। यह ईश्वरीय कार्य क्षेत्र में आता है।

बीज से वृक्ष का विकास, गर्भ के प्राणी का विकास ईश्वरीय कार्य क्षेत्र में है तो आटे से रोटी, मिट्टी से घड़े का बनाना जीवों का कार्य क्षेत्र है। पर कोई भी कार्य (बना हुआ पदार्थ) बिना कर्ता के नहीं बन सकता है। जैनमत के सिद्धान्त जगत को अनादि तथा पदार्थों का निर्माण बिना कर्ता के मानना अवैज्ञानिक है और उसका समर्थक विपक्षी लेखक की मूर्खता है।

जिन जैन तीर्थंकरों ने इस प्रकार की बातें लिखी वा कही हैं वे जैन शास्त्र सर्वथा मिथ्या हैं, स्वामी जी ने ठीक ही यह लिखा है। सर्वज्ञ गप्पें नहीं हाँका करते हैं।

वास्तवमें जैनों के २४ तीर्थंकर कभी हुए ही नहीं थे, उनकी कल्पना बेहूदी रही है। जरा तीर्थंकरों की आयु की गप्पाष्टक देखें.

और जैन शास्त्रों के लेखकों की योग्यता के दर्शन करें—

ऋषभ देव की आयु ५८२७०४०००००००००००००००० वर्ष थी
अजितनाथ ५०८०३२०००००००००,०००००० वर्ष।
सम्भवनाथ ७२४३६००००००००००००००० वर्ष।

इसी तरह सुमतिनाथ-पद्मप्रभ-सुपार्श्वनाथ-चन्द्रप्रथ-सुविधिनाथ शीतलनाथ आदि की भी आयु २१-२१ अंकों की होती थी। यह सब गप्पाष्टकें जैन सर्वज्ञों की पोल खोलने को काफी हैं। विज्ञान के अनुसार इस पृथ्वी को बने अभी तक दो अरब वर्ष भी पूरे नहीं हुये हैं। स्वामी दयानन्द जी के खण्डन का उत्तर दिया ही नहीं जा सकता है, वह सप्रमाण-तर्क युक्त बुद्धि पूर्वक एवं विज्ञानानुमोदित है।

जैनमत के गपोड़े कुछ तो सत्यार्थ प्रकाश में ही दिये हैं। विशेष देखना जो चाहे वह हमारी प्रसिद्ध पुस्तक जैन मत समीक्षा में सम्पूर्ण जैनमत का पोलखाता देख सकेगा। विपक्षी तो नुत्फे हराम होने से डाक भी समझने की योग्यता नहीं रखता है। दिगम्बर गप्प दीपिका पुस्तक स्वामी कर्मानन्द जी लिखित भी देखने योग्य है।

जैनो लोग कितने अदयालु एवं क्रूर होते हैं यह प्रमाण सत्यार्थ प्रकाश के बारहवें समुल्लास में तथा हमारी जैनमत समीक्षा में पाठक देखें। ये लोग अन्य मत वालों से घोर द्वेष रखते हैं। जैन ग्रन्थ रत्न करण्ड श्रावकाचार (पृ० ४० श्लोक ६० में लिखा है

उम्मसा देसणाये चरणं नासितो जिण वीर दाणम्।
वा वन्न दंसणं नहु लप्मा तरि सुदुट्ठं ॥

अन्य मत वाले की सेवा आदि वा प्रशंसा करने से श्री जिनेश्वर देव का कहा हुआ चरित्र नष्ट होता है, अतः जो जैनी नहीं हैं उस मनुष्य को देखना भी बुरा है।

जैनमत में बिना परिश्रम के भी मुक्ति मिल जाती है, जैनमत की विलक्षण बातें, जैन तीर्थंकरों की ५००/५०० योजन ऊँचाई (लम्बाई), चार चार कोस की मक्खी, बिच्छू मानना अति भ्रान्तिपूर्ण बातों के प्रमाण पाठक सत्यार्थ प्रकाश में देख लेवें।

मूर्तिपूजा की प्रथा बौद्ध व जैनों से ही चली है। शिवलिंग पूजा (मूतेन्द्रिय पूजा) भी बुद्ध जी की मूत्रेन्द्रिय की मरने पर वन्दना से तथा जैन तत्वादर्श पृ० ५४३ पर दिए गये प्रमाणानुसार पुरुष लिंग पूजा का प्रारम्भ जैनों से ही हुआ था जो बाद को हिन्दुओं में शिव लिंग पूजा के रूप में उनकी नकल में चालू हो गया।

विपक्षी अथर्व वेद ३/१०/३ का संवत्सरस्य प्रतिमां यॉंत्वा

रात्र्युपास्महि। सान आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं स्रज ॥

यह मन्त्र पेश करके अपनी अज्ञानता से वेद में मूर्तिपूजा साबित करके जैनियों पर से आक्षेप हटाना चाहता है। इस मंत्र में मूर्तिपूजा का नाम तक नहीं है। प्रसंगानुसार मंत्रार्थ निम्न होगा—

हे (रात्रि) रमण योग्य सुखदात्री रात्रि के समान पति को सुख देने हारी पत्नि! (यां) जिस (त्वां) तुझको हम (सम्वत्सरस्य) गृह पति का (प्रतिमां) दूसरा रूप अर्धाङ्गिनी के समान (उपास्महे) जानते हैं (सा) वह तू (नः) हमारी (आयुष्मतीं) दीर्घायु (प्रजां) प्रजा को (रामस्पोषेण) धन धान्य आदि पोषक पदार्थों द्वारा (सं सृज) युक्त कर।"

पूर्व प्रसंगानुसार वेद में इस सूक्त में बधू के कर्तव्यों पर उपदेश चल रहा है। मूर्तिपूजा का उल्लेख नहीं है। विपक्षी की बकवास मूर्खतापूर्ण है।

आगे वह लिखता है कि संस्कार विधि में छुरे की पूजा प्रार्थना का विधान है। हमारा उत्तर है कि विपक्षी झूठा है। इनकी पूजा उपासना की कोई बात संस्कार विधि में नहीं लिखी है। वहां लिखा है—

"स्वधिते मैनं हिंसी। इस पर विपक्षी लिखता है कि दयानन्द ने अर्थ लिखा है, "हे क्षुरे तू इस बालक को मत मार।" हमारा उत्तर है कि वह अर्थ संस्कार विधि में नहीं दिया है। विपक्षी झूठा है। केवल मन्त्र भाग ऊपर का दिया गया है। नाई जब बालक के कोमल

सर से बाल उतारने को तैयारी करता है तो छुरे को हाथ में लेकर इसकी धार देखते हुए परमात्मा से प्रार्थना करता है 'विष्णो ! प्रभो ! आपका दिया हुआ यह (दष्ट्रोऽसि) काटने का शस्त्र है। प्रभो ऐसा न हो कि असावधानी वश मेरा हाथ हिल जावे और यह अस्त्र बालक के लग जावे, उससे बालक को कष्ट न पहुंचे ऐसी कृपा मुझ पर करो।' यह 'स्वधिते मैनं हिंसो' ऊपरके वाक्य के बाद के दिये वाक्य को मिला कर मंत्र का अर्थ है। इसमें जड़ पूजा कहाँ है ? वैदिक पद्धति में हर काम के करने से पूर्व प्रभु से प्रार्थना व उससे कार्य को निर्विघ्नता पूर्वक पूरा करने की प्रार्थना की जाती है। जैसे सावन के अन्धे को सर्वत्र हरा ही हरा दीखता है वैसे ही वेश्या पुत्र को सर्वत्र पत्थर पूजा के ही ख्वाब आते रहते हैं। पढ़ा नहीं लिखा नहीं मूर्खों का सरताज बना बैठा है। इस तान्त्रिक वाममार्गी गर्ग का जैनमत से क्या सम्बन्ध है जो उसकी भी वकालत करने बैठ गया है जबकि जैनमत के बारे में इसे फूटा अक्षर भी नहीं आता है। जिस जैनमत में चोर रण्डीबाज भी मुक्त हो जाते हैं उन्हें कृत कर्मों का फल भी नहीं भोगना पड़ता है ऐसे पाखण्डी मत की वकालत करने को कोई महामूर्ख ही सामने आवेगा।

इस प्रकार जैनमत पर विपक्षी के सभी आक्षेपों का उत्तर दे दिया गया। हमारा कहना है कि विशेष जानने के लिये जैनमत समीक्षा व सत्यार्थ प्रकाश पढ़े। यदि दम हो तो कोई जैन विद्वान् सामने आवे, ऐसे मूर्खों को वकील बनाने से जैनमत की मट्टी खराब होगी। क्या जैनी पंडित सब मिट गये जो गधों से जैनमत की वकालत कराई जाती है ?

जैनमत के बारे में जैन विद्वानों से स्वामी कर्मानन्द जी ने भूमंडल के समस्त जैनियों से १०० प्रश्न कभी किये थे। कोटा के पं० जिया लाल जी ने एक बार ५० प्रश्न प्रकाशित किये थे तथा जैनियों द्वारा दिया गया गलत उत्तर देखकर पुनः "५० जैन उत्तरों की समीक्षा"

छपाई थी, जिसका जवाब कभी नहीं दिया जा सका था। स्वामी शान्तानन्द जी सन्यासी ने गुड़गाँवा से विश्व भर के जैन विद्वानों से ५० सश्न सन् १९३६ में किये थे। किसी भी आर्य विद्वान के प्रश्नों का उत्तर आज तक जैनियों से नहीं बन सका है। हमारी पुस्तक जैनमत समीक्षा पर भी संसार का कोई विद्वान कलम उठाने का साहस नहीं कर सका है। पं० वैद्यनाथ जी शास्त्री ने जैनमत पर एक पुस्तक 'तत्वार्थादर्श' लगभग २० वर्ष पूर्व लिखी थी, उस पर भी जैनियों का साहस कलम उठाने का नहीं पड़ सका है। सारा जैन साहित्य असम्भव गल्पों से भरा पड़ा है। ईश्वर-जीवात्मा-सृष्टि उत्पत्ति-मोक्ष आदि के बारे में जैनियों के सर्वज्ञों की सारी धारणायें भ्रान्त रही हैं। संसार का कोई भी जैनी पंडित उन जैन स्थापनाओं का समर्थन शास्त्रार्थ के क्षेत्र में नहीं कर सकता है। विपक्षी उनका झूठा वकील बन कर स्वामी दयानन्द और आर्य समाजियों को गाली दे सकता है पर पाण्डित्य पूर्ण कलम उठाने की दम उसमें भी नहीं है।

जैनमत का सप्त भंगी न्याय (स्याद्वाद) केवल शब्दाडम्बर है और कुछ नहीं है। इसी के प्रथम भंग के अनुसार हम विपक्षी को 'गुण्डा' कहें तो क्योंकर गलत होगा, क्योंकि गुण्डे ही महापुरुषों को गालियाँ देने का साहस कर सकते हैं जैसा उसने द० गा० पु० में किया है। विपक्षी से बढ़ कर मूर्ख संसार में कहाँ मिलेगा जो वेदों में मूर्ति पूजा ढूंढता फिरता है, संस्कृत नहीं समझता पर वेद मन्त्रों का अर्थ करने का दुःसाहस करता है। सत्यार्थ प्रकाश में जैन शास्त्रों को गपोड़ा लिखा जाना शतप्रतिशत ठीक है, कोई काट नहीं सकता है। जैनमत का कर्मफल सिद्धान्त-मोक्ष णमोकार मन्त्र में धुँआधार नमस्कार आर्यों को नमस्कार—जैनियों का भूगोल ज्ञान जैनियों की अहिंसा जीवात्मा की व्याख्या आदि सभी हास्यास्पद-कल्पनायें हैं जो बुद्धि एवं तर्क की कसौटी पर कोरी गल्प ठहरती हैं। विपक्षी कुपढ़

'गर्ग' की तो हस्ती क्या है, संसार के जैन विद्वान भी उनको शास्त्रार्थ में जैनमत को सही साबित नहीं करते हैं, इसीलिए जैन विद्वानों की जैनमत पर से आस्था उठ रही है।

बौद्ध मत

बौद्धमत के सम्बन्ध में लेखक अपनी नीच कुल की असभ्यता का प्रदर्शन करते हुये स्वामी दयानन्द जी को गालियाँ देने में नहीं चूका है। स्वामी जी ने बौद्धमत पर लिखा है कि बुद्ध शब्द का अर्थ होता है 'बुद्धया निर्वर्तते सबौद्धः' अर्थात् जो बुद्धि से सिद्ध हो अर्थात् जो जो बात अपनी बुद्धि में आवे उसको माने और जो जो अपनी बुद्धि में नहीं आवे उसको नहीं माने।' लेखक इस अर्थ को काट तो नहीं सका है पर गालियों की भरमार कर दी है।

बुद्ध वस्तुतः घोर नास्तिक था। वह किसी भी ग्रन्थ को प्रमाणिक नहीं मानता था। ईश्वर व जीवात्मा की अनादि सत्ता से इन्कार करता था, पुनर्जन्म में भी उसका विश्वास नहीं था, जगत को पैदा हुआ भी नहीं मानता था। जीवात्मा को उत्पन्न होकर नाशवान मानता था, परमेश्वर के अस्तित्व से ही इनकार करता था, घोर माँसाहारी वा सुअर का मांस उसे बहुत प्रिय था। तथा उसे खाकर ही उसकी मृत्यु हुई थी। वह ब्राह्मण धर्म का विरोधी था। बौद्ध विद्वान् राहुल शांस्कृत्यायन ने अपनी पुस्तक बौद्धचर्या में लिखा है कि इस मत की अनेक शाखायें हो गई थीं। शराब मांस व मैथुन (व्यभिचार) में पारंगत न होने वालों को बौद्ध ही नहीं माना जाता था। भैरवी चक्र वाम मार्ग की प्रथा बौद्धों में ही चालू थी व उन्ही का आविष्कार था।

ऐसे नास्तिक वेद विरोधी चरित्रहीनता के प्रचारक बौद्धमत की यदि स्वामी दयानन्द जी ने कठोर आलोचना की है तो उसमें गलत

क्या किया है। शंकराचार्य जी ने बौद्धमत का खण्डन किया तो क्या पाप किया। मानव जाति का सदाचार से हटा कर ईश्वर से विमुख बना कर जिस बौद्धमत ने भारतवर्ष की आदर्श सभ्यता का विनाश करके मदिरा माँस व व्यभिचार के घोर प्रचार से कलंकित करा दिया उसे कोई अपना आदर्श व पूज्य विपक्षी जैसा धूर्त ही मान सकता है।

बौद्धमत की खुली समीक्षा, उसकी वास्तविकता जानना हो तो हमारी पुस्तक 'बौद्धमत का भण्डाफोड़' को विपक्षी पढ़ कर अपनी मूर्खता पर पश्चाताप कर सकेगा। पुस्तक मूल्य मात्र ३) है।

बुद्ध न तो संस्कृतज्ञ था न वेद शास्त्रों का जानकार था अतः अपनी अशिक्षित बुद्धि द्वारा जो भी उसकी समझ में नहीं आया उसी से इनकार करता चला गया था, इसीसे स्वामी दयानन्द जी की बुद्ध की व्याख्या बुद्धि में जो न आवे इसे न माने और जो आवे उसे माने यह ठीक ही तो है, दयानन्द के प्रति द्वेष बुद्धि रखने वाला जहरीला जानवर-गर्ग उसे कैसे समझ सकता है। जिसने कभी बौद्ध साहित्य की शक्ल भी नहीं देखी है। बुद्ध के मानने वालों को यदि 'बुद्ध त् बुद्धू' के अनुसार बुद्धू साबित किया जावे तो क्या गलत होगा क्योंकि वे आज भी वैदिक सत्य को, ईश्वर जीव प्रकृति-मांसाहार निषेध व्यभिचार से प्रथक रहने-वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानने-सृष्टि को उत्पन्न हुई तथा पुनर्जन्मादि को मानने को तैयार नहीं है बल्कि वेदिक धर्म व वैदिक धर्म के सम्पूर्ण ऋषियों-महापुरुषों को कलंकित करने वाली गन्दी पुस्तकें छाप छाप कर मिथ्या बदनाम कर रहे हैं। स्वयं बौद्ध धर्म के ग्रन्थ गल्पों के भण्डार हैं उनमें काल्पनिक बातें तथा मिथ्या कथायें बौद्धों की प्रशंसाओं से भरी पड़ी हैं।

यज्ञों में गौवध-यज्ञों का विरोध-पौराणिक देवताओं को अपमानित करना, वैदिक ऋषियों के चरित्रों को कलंकित करना-शाक्यों के वंश का भाई-बहिन के व्यभिचार से चालू होना बताना सूर्यवन्शी महाराजा इक्ष्वाकु द्वारा तीन लाख गायों का यज्ञ के निमित्त तलवार

से काटा जाना आदि मूर्खतापूर्ण बातें बौद्ध साहित्य में भरी पड़ी हैं। राम-सीता व कृष्ण को गालियाँ देने वाली किताबें आज भी ये बुद्ध के बुद्ध लखनऊ से छपा २ कर बौद्धों में फैला कर उन्हें गुमराह कर रहे हैं। विपक्षी गर्ग स्वयं मूर्ख है जो वैदिक धर्म की रक्षा करने वाले महर्षि दयानन्द को गालियाँ देता है और हिन्दू आर्य जाति व सभ्यता के दुश्मन दैत्य के अवतार बुद्ध की प्रशंसा के गीत गाता है। हमारा कहना है कि विपक्षी हमारी पुस्तक बौद्धमत पर पढ़ कर अपनी अज्ञानता का परिमार्जन करले। भविष्य पुराण में बुद्ध को दैत्य का अवतार माना हैं। देखो (भविष्य पुराण ख० ४ अ० २१ श्लोक ३०)

वैष्णव मत

अनेक मेरठ के लोग बताते हैं कि राजेन्द्र गर्ग के पितामह कभी जूते सिया करते थे तो उसी आधार पर तुमको चमर वंशी कहने लगे तो क्या गलत होगा चाहे अब तुम टूटी फूटी संस्कृत पढ़ कर माम्टर बन गए हो तो तुम 'गर्ग' अर्थात जहरीले जानवर कहलाते हो। तुम्हारा गर्ग शब्द लिखना ही तुमको नीच जहरीले कुलोत्पन्न बताता है क्योंकि पण्डित कुलोत्पन्न होने पर तुम्हारे लेखन व करनी में शालीनता होती और विद्या का चमत्कार दिखाई देता। पर नीच खान्दान का संस्कार साक्षात मेरठ की रण्डी जैसी किसी गन्दी औरत की सन्तान जैसी आदतें तुमको तदनुकूल वंशोत्पन्न घोषित कर रही हैं। स्पष्ट बताओ कि तुम कहीं ऐसे ही तो नहीं हो। तुम्हारी गालियां तो कुछ ऐसा तुम्हें बता रही हैं। नाराज मत होना मैंने तो असलियत समझने व तुम्हें समझाने का यत्न किया है।

पौराणिक वैष्णव सम्प्रदाय की समीक्षा सत्यार्थ प्रकाश में ठीक ही ठीक है। तुम एक भी प्रमाण का खण्डन नहीं कर सके हो जो स्वामी जी ने दिये हैं और उनके आधार पर कठोर वाक्य उन

सम्प्रदायों व उनके अज्ञानी प्रवर्तकों के बारे में लिखे हैं। प्रमाणों पर कलम न उठा सकने पर स्वामी जी को गालियाँ देना कुत्तों जैसे तुम्हारे लोग ही कर सकते हैं जो भोंकना ही जानते हैं।

शठकोप सूप बना कर बेचा करता था। उस युग में यह पेशा केवल कंजर ही करते थे और आज भी कंजरियाँ ही करती हैं। कोई अग्रवालिन सूप नहीं बनाती, पर तुम्हारे घर में बनते हों तो दूसरी बात है। इसीलिये 'विक्रिय सूप विचचार योगी', प्रमाण के आधार पर स्वामी जी ने शठ कोप' को कंजर लिखा है जो वैष्णव मत का आदि प्रवर्तक था। 'शठ कोप' में शठ शब्द भी बताता है कि वह शठ 'धूर्त-नीच कुल का था।' किसी अग्रवाल गर्ग गोत्रीय का नाम शठ कोप में तुम नहीं दिखा सकते हो, चाहे तुम भले ही कंजड़ी को कोख से जन्मे हो जैसा कि तुम्हारा जन्मना गन्दा स्वभाव तुमको नीचकुलोत्पन्न घोषित कर रहा है।

यवन से बना 'यावनाचार्य' शब्द भी बताता है कि वह मुसलमानी मत का आचार्य व उसी में जन्मा मुसलमान था। जैसे आजकल भी मुस्लिम स्त्री 'सन्तोखां का नाम बदल कर उसे सन्तोषी बनाकर सन्तोषी माता के रूप में तुम जैसे पापियों के परिवारों में उसकी पूजा की जाती है, वैसे ही यावनाचार्य को तुम जैसे मूर्खों ने यमुनाचार्य कहना प्रारम्भ कर दिया था। ये सभी लोग शठकोप-मुनिवाहन शूद्रवर्णोत्पन्न थे। हो सकता है उनको भी विपक्षी 'गर्ग' गोत्र वाला जहरीले वंश वाला अपना पड़बाबा मान कर पूजा करता हो। यह कंजर कुल का होने से कंजर जाति का था, कंजर वर्ण सत्यार्थ प्रकाश के किसी भी अब तक के संस्करणों में नहीं लिखा है। किसी नये प्रकाशक ने कम्पोजीटर की भूल से कंजर जाति के स्थान पर कंजर वर्ण भूल से छाप दिया हो दूसरी बात है। अजमेर के छपे संस्करणों में जाति लिखी है, वर्ण नहीं। अतः विपक्षी का कंजर वर्ण हमसे पूँछना पागलपन है। मलवाहन-मुनिवाहन-कूड़ावाहन आदि शब्द गुण

कर्मों के अनुसार भंगी जाति के ही हो सकते हों या गर्ग गोत्रीय तुम्हारी जाति के किसी के होंगे। जब तुम इतनी सी बात नहीं जानते तो मेरठ की रण्डियों के गुरु जी कैसे बन गये हो ? पहिले नाम मलवाहन का था, तुम्हारे जैसे ने मुनिवाहन बदल कर कर दिया होगा, ऐसा नामों में पाठ भेद तो होता ही रहता है। तुम छोटे थे तब तुम को बच्चे जूते मार २ कर राजेन्द्रा कहते थे अब तुम मास्टर राजेन्द्र कुम्हार हो गये। इसमें कोई दर्शन या व्याकरण की योग्यता की जरूरत नहीं पड़ती है। जब जैसो पेशे के अनुसार योग्यता बढ़ती या बदलती है तो नामों की शक्लें भी बदल जाती हैं।

विपक्षी ने पूंछा है कि दयानन्द ने वैष्णवों को कुकर्मी न जाने किस आधार पर लिखा है ? हम इसे अब वास्तविक आधार बताते हैं कि सम्पूर्ण वैष्णव मत कुकर्मी व दुराचारी था उसका प्रवर्तक भी व्यभिचारी था। वैष्णव लोग अपने सम्प्रदाय को विष्णु भगवान का सम्प्रदाय कहते हैं, उनके चरित्र को खोलने से पूर्व हम यहां बताना चाहते हैं कि कुछ विद्वान शूद्रकुलोत्पन्न विष्णु स्वामी मद्रासी से इस का प्रारम्भ मानते हैं तथा शठ कोप मलवाहन (मुनिवाहन) यावनाचार्य और वाद को रामानुजाचार्य आदि को इस सम्प्रदाय को बढ़ाने वाला बताते हैं। स्वामी दयानन्द जी शठकोप से इसका प्रारम्भ लिखते हैं। किसी भी 'शठ' द्वारा कुपित होकर चलाया गया सम्प्रदाय कैसा होगा यह आप स्वयं सोच सकते हैं। छूतछात से कुपित होकर शूद्र द्वारा चलाया गया यह सम्प्रदाय शठ कोप कंजर से चला था।

हम यहाँ वर्तमान वैष्णवों की मान्यतानुसार विष्णु भगवान के दुश्चरित्रों की कुछ मिसालें पुराणों से देते हैं। हिन्दू धर्म के २४ अवतार विष्णु के ही माने जाते हैं। पुराण उनके बारे में लिखता है—

देखो शिव पुराण धर्म संहिता अ० १०। यहां हम श्लोकों का केवल अर्थ दे रहे हैं, श्लोक धर्म संहिता में देखलें या हमारी पुस्तक 'अवतार रहस्य' में पढ़ लेवें—

"भगवान विष्णु राक्षसों को मारकर उनकी औरतों को पाताल में लेगया तथा उनके साथ व्यभिचार करता मजे मारता रहा। त्रेता युग में राम ने जन्म लेकर जानकी से विवाह किया, किन्तु स्त्रियों के विलास से तृप्त नहीं हुआ और वन में जाने से गर्भाधान भी अच्छी प्रकार से नहीं कर सका। इसलिए कलि के आरम्भ में कृष्ण अवतार धारण किया और बालकपन में ग्वालिन की छोकरियों गोपियों से सम्भोग करके दस लाख लड़के पैदा कर डाले। तब भी व्यभिचार से तृप्ति नहीं हुई तो युवा अवस्था में रुक्मिणी से शादी करके प्रद्युम्न को पैदा कर दिया। उसके बाद प्रागज्योतिष के राजा नरक को मारकर १६००० औरतें पकड़ लाया, उनसे भोग करके ६०००० लड़के पैदा कर डाले। फिर भी तृप्ति नहीं हुई तो राधा नाम की औरत को फाँस लिया इतना स्त्रीभोग व्यभिचार कर लेने पर भी पौराणिक भगवान विष्णु नित्य ही परनारियों का लम्पट है।"

यह है आपके शंख चक्र गदा पद्म धारी वैष्णव पन्थ के पूज्य भगवान विष्णु का व्यभिचारपूर्ण जीवन का वृतान्त। कुछ शरम आती है या नहीं अपने मूर्खता पूर्ण वैष्णव सम्प्रदाय पर। हम ज्यादा पोल तुम्हारे सम्प्रदाय की न खोलकर थोड़ा सा दिग्दर्शन कृष्णावतार का भी करा देना उचित समझते हैं। पुराण में लिखा है—

कृष्णो भूत्वा अन्य नार्यश्च दूषिताः कुल धर्मतः।
श्रुतिमार्ग परित्यज्य स्वविवाहाः कृतास्तथा॥

शिव पु० रु० सं० पु० खं० अ० ६-२४।

पौराणिक अवतार उनके भगवान श्रीकृष्ण जी ने कुल धर्म से पतित अन्य औरतों के साथ वेद मार्ग त्याग कर व्यभिचार किया तथा विवाह भी किया था।

गोपियों ने कृष्ण के लिये कहा था कि—

सुरत नाथतेऽशुल्क दासिकावरद निघ्नतो नेह किं वधः॥३१॥
(भाग १०।३१।२)

हे सम्भोग के पति कृष्ण तुम्हारे हम बिन मोल की दासियों के समान अपने नेत्रों के कटाक्ष से घायल करना हमारा वध करना क्या नहीं है ?

इसमें अवतार कृष्ण जी को सम्भोग का पति घोषित किया है। इससे स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण जी उनके साथ घोर व्यभिचार किया करते थे।

श्रीकृष्ण की प्रेमिकायें गोपियाँ कौन थीं—

क्वेमा स्त्रियो वनचरी र्व्यभिचार दुष्टाः ।६०। भाग १०-४७।

गोपियां जंगली व्यभिचारिणी और दुष्टा थीं।

तमेव परमात्मानं जार बुद्धापि संगता ॥१०-२९-११।

उनका श्रीकृष्णजी में व्यभिचार भाव रहता था।

उनसे घोर व्यभिचार क्रीड़ा करते रहने के कारण ही कृष्णजी को उन्होंने सम्भोग के पति की पौराणिक उपाधि प्रदान की थी।

राधा ने कृष्ण को रति चोर अति लम्पट तथा धूर्त घोषित करके धक्के लगवा कर अपने घर से औरतों से बाहर निकलवा दिया था। देखें ब्रह्म वैवर्त कृष्ण जन्म खण्ड अ० ३ श्लोक ८ व ३२॥

महानात्मा श्रीकृष्ण जी को आर्य समाज सम्पूर्ण आर्य जाति का आदरणीय पूर्वज मानता है, उनके जन्मोत्सव के पर्व मनाता है। हम जानते हैं कि वे अपने युग के सर्वश्रेष्ठ मानव थे और सारे ही शूरवीर एवं बड़े से बड़े विद्वानों द्वारा समादृत एवं पूज्य थे। ऐसी महान पवित्र हस्ती को मेरठ का यह गुण्डा 'गोपाल सहस्त्रनाम' के श्लोक १३७ के अनुसार—'चोर जार शिखामणि'

अर्थात चोर और व्यभिचारियों में शिरोमणि मानता है। इसलिये हम कहते हैं कि कम्बख्त ! डूब मर चुल्लू भर पेशाब में। तूने सनातन धर्म की बड़ी मट्टी खराब कराई है। तू वैश्य गर्ग कुल कलंक है। इसलिये आर्य जाति के महापुरुषों को गन्दी गालियाँ दे बैठा है। अगर तू ब्राह्मण होता तो तेरी कलम से गन्दी गालियां लिखी ही नहीं

जा सकती थीं। पाण्डित्य का क्षेत्र गुण्डों के लिए नहीं है। यह सभ्य-सुशील-सुसंस्कृत धार्मिक वृत्ति के ब्रह्मणों का है जो दूसरों का आदर करना व कराना जानते हैं। जिनकी भाषा व वाणी में शालीनता होती है, जिनकी वृत्ति धार्मिक होती है। तेरे जैसे रण्डीबाज गुण्डे किताब लिखना क्या जानें। नुत्फेहराम तो दयानन्द गाली पुराण ही लिख सकेगा। इससे ज्यादा तू जानता ही नहीं है।

श्रीकृष्ण जी के बारे में पद्म पुराण उत्तर खं० अ० २४५ श्लोक १७४ में एक प्रश्न भी पूंछा गया है जो उनके घोर व्यभिचारी होने का स्वयं प्रमाण है-

धर्म संरक्षणार्थाय जगत्यामव तीर्य सः।
परदाराभि गमनं कथं कुर्य्याज्जनार्दनः॥

विष्णु का जन्म तो धर्म रक्षा करने के लिए हुआ था 'तब उन्होंने व्यभिचार क्यों किया।

क्योंकि आप श्रीकृष्ण जी को भी रामावतार के समान विष्णु का अवतार मानते हैं अतः हमने आपके भगवान विष्णु का बहुत ही छोटा चित्र ऊपर दिया है। जब गुरु व्यभिचारी रहे थे तो वैष्णव पन्थी भी सारे वैसे ही होने चाहिए। इसीलिए स्वामीजी ने उसे व्यभिचार प्रधान पन्थ माना है।

वैष्णवों का पुष्टि मार्ग (बल्लभ शाखा) भी घोर व्यभिचार प्रचारक रही है। इसका प्रमाण 'महाराज लाइबल केस' का जज द्वारा दिया गया निर्णय है। हम यहाँ इसका सार देते हैं। जजों ने लिखा है कि इन्होंने एक शास्त्र बना रखा है जिसमें इन लोगों ने लिख रखा है—

"तस्मादादौ स्वोयभोगात्पूर्व मेव सर्ववस्तु पदेन भार्या पुत्रा दिनामपि समर्पणं कर्तव्यं विवाहानन्तरं स्वोपभोगं सर्व कार्ये सर्व कार्य निमित्ते तत्कार्योपिभोगी, वस्तु समपूणं कार्यं समर्पणं कृत्वा पश्चात्ता-निवानि कार्याणि कर्तव्यानीत्यर्थः।

अर्थात वर को चाहिये कि अपनी सद्यो विवाहिता पत्नी को अपने भोग के पूर्व अपने महाराज के पास भेजे। भार्या-पुत्र-धनादि अर्पण करे। अर्थात जिस भोग की जो जो वस्तु हों उस २ भोग की वह वस्तु महाराज के पास भेजे। पाणिग्रहण संस्कार होने के बाद अपने संभोग के प्रथम, वर अपनी वधू को महाराज के पास भेजे, पश्चात अपने काम में लावे। अन्त में जजों ने लिखा है कि "स्त्रियाँ चाहे अविवाहिता कुमारी हों या विवाहिता हो उनका धर्म है कि वे महाराजों से उनकी इच्छानुसार व्यभिचार प्रेम और विविध लालसा से प्रेम करें। महाराजों के साथ व्यभिचार करना केवल निहित हो नहीं है प्रत्युत वह अत्यन्त आवश्यक है। उसके बिना कोई भी लोक परलोक में सुख की आशा नहीं कर सकता। यह पाशविक व्यभिचार का मार्ग हो उनके लिए स्वर्गीय सुख है। वे शैतान के अवतार हैं।"

Consequently before he himself has enjoyed her, he should make over his own married wife (to the Maharaja). After having got married he should, before having himself enjoyed his wife, make an offering of her (to the Maharaja) afterwhich he should apply her to his own use. (Maharaja Lible Case).

It is the duty of the female member to love Maharaja with adulterive love and sexual lust when soever called upon or required by any of the latter. So to do, albeit such female member are or may be unmarried maidenes or wives of other men. Adultry with the Maharaja is not only enjoyed but an absolute necessity without which no man can expect happiness in this world or bliss in the next. A course of bestial licentionsness is their beautitude of heaven. They (Maharajas) may be described as living incarnation of Saitan.

(Maharaja Lible Cases of Bombay High Court)

इस प्रकार हमने वैष्णव पन्थ तथा उसके पुष्टी मार्ग (कुष्टी

मार्ग) के अत्यन्त घृणित व्यभिचारीय स्वरूप को उजागर करके गर्ग के पाखण्ड का भण्डाफोड़ कर दिया है। उसमें दम हो तो सत्यार्थ प्रकाश में दिये इन सम्प्रदायों के ग्रन्थों के प्रमाणों का खण्डन करके दिखावे। गुण्डों की तरह गालियाँ बकने से लोग उसे गुण्डा कहने लगेंगे।

स्वामी जी ने ठीक ही लिखा है कि उन्नति वा स्वर्ग श्रेष्ठ कर्मों पर निर्भर करता है। न कि तरह तरह के तिलक छापे माथे पर लगाने से स्वर्ग मिलेगा। यदि माथे पर तिलक लगाने से स्वर्ग मिलता हो तो सारे मुँह पर रंग या स्याही पोत लेने से कोई बहुत बड़ा स्वर्ग मिल जाता होगा। दयानन्द जी की बुद्धि पूर्वक आलोचना का परिणाम है कि अब सभी पौराणिक मुंह को तिलक छापों से साफ रखने लगे हैं। विपक्षी के पाखण्डी परिवार में भी अब कोई नहीं है जो तिलक छापे लगाए फिरता हो।

विपक्षी हमसे वैष्णव पन्थ के माथे पर ऊर्ध्व पुण्ड तथा त्रिपुण्ड तिलक लगाने का प्रमाण पूछता है। उसे यह प्रश्न गीता प्रेस गोरखपुर वालों से पूछना चाहिए। विष्णु पुराण में विष्णु का चित्र लगा है उसके माथे पर ऊर्ध्व पुण्ड तिलक क्यों लगाया गया है तथा सभी विष्णु की मूर्तियों में यह क्यों लगाया जाता है। मध्य युग में तथा अभी तक शैव वैष्णवों में ऊर्ध्व पुण्ड तथा त्रिपुण्ड तिलक लगाने पर संघर्ष होता रहा है। यह साम्प्रदायिक साइन बोर्ड सम्प्रदायों की पहिचान के लिए होते थे जैसे माथे पर नमाजी मुसलमानों के जो ठेक पड़ जाती हैं, खुदा ने कुरान में उसे खुदाई कृपा पाने वाले की निशानी माना है अर्थात यह उनका ट्रेड मार्क है। जब उसे कहीं पता न मिले तो हम उर्ध्व पुण्ड लगाने के पौराणिक प्रमाण का पता बता देंगे। हम भी देखें कि पौराणिकों को कुछ आता जाता भी है या विपक्षी वैसे ही लण्ठाचार्य बन बैठे हैं।

स्वामी-जी ने वृन्दावन को अब वेश्या वन जैसा लिखा है तो गलत क्या है। वह स्वयं ही वहाँ जाकर कुछ रात रह कर स्वयं अनुभव करले, पर कुछ खर्च चाय पानी के लिए दाम होने चाहिए। जैसे को तैसा लिखना कोई गलत बात नहीं है। मेरठ वालों के कथनानुसार वेश्या पुत्र होने से तुमको कोई भड़ुआ कहने लगे तो इसमें बुरा न माने असली रूप में याद तो रखते हैं तुमको।

भागवत बताने वाला लालभुझक्कड नहीं था तो कौन था जिसने महान कृष्ण को व्यभिचारिणी गोपियों से व्यभिचार करने वाला 'सम्भोग का पति' व कब्जा से व्यभिचार करने वाला बता कर उनका सारा ईश्वरत्व धूल में मिला दिया।

'नित्यं नक्त रतिं तत्र चकार हरिणा सह' ब्रह्मवैवर्त पुराण
कृष्ण जन्म खं० अ० १५।।

रोज रात को कृष्ण जी राधा के साथ व्यभिचार किया करते थे, लिख कर उनको श्रेष्ठ मानव भी नहीं छोड़ा। भागवत की गल्पें देखने से लिये विपक्षी हमारी भागवत समीक्षा तथा गीता की असलियत जानने के लिये "गीता विवेचन" पढ़ कर अपना अज्ञान मिटा सकेगा। 'पुराणों के कृष्ण पुस्तक भी इस अवतार की असलियत खोल देती है।

यदि भागवत तथा ब्रह्मवैवर्त पुराण न बने होते तो महात्मा श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज के अति पावन निर्मल चरित्र पर कोई भी कीचड़ नहीं उछाल सकता। इनके लेखक गर्भ में ही मर जाते तो देश व आर्य साहित्य की पवित्रता बनी रहती। वाम मार्गीय जिस प्रकार परस्त्री गमन के समय बोलते जाते हैं 'अहं भैरव स्त्वं भैरवी' मैं भैर व हूं और तू भैरवी है। वैसे ही वैष्णव बल्लभ सम्प्रदाय वाले भी व्यभिचार के समय 'कृष्णोऽहं भवतां राधा तावयोरस्तु संगमः।" मैं कृष्ण हूँ और तू राधा है। मेरा तेरा सम्भोग इसीलिये हो रहा है। 'अरे नीच पाखण्डी धूर्त 'गर्ग' डूब मर चुल्लू भर गधे की पेशाब में,

तुझे दयानन्द पर कलम उठाते लज्जा भी नहीं आई। यही है तेरा सड़ातन धर्म और गन्दा वैष्णव सम्प्रदाय जो घोर व्यभिचार प्रधान है। जैसे तेरे कल्पित अवतार व्यभिचारी पुराणों में बताये हैं वैसे ही उनके चेले भी व्यभिचारी होते हैं। धर्म की आड़ में देश भर में गुण्डा गर्दी फैलाना वैष्णव ग्रन्थ का कार्य रहा है स्वामी दयानन्द जी ने यदि सही बात लिख दी तो तू गाली देने बैठ गया। किस बेवकूफ ने तुझे मास्टर बना दिया है जिसे शिष्टाचार के साथ लिखने तक की तमीज नहीं हैं क्या मेरठ कालेज में और भी तुझ जैसे लट्ठ गंवार अध्यापक हैं जो विद्यार्थियों के चरित्रों को बिगाड़ते रहते हैं। क्या मेरठ कालेज में मास्टरों में शालीनता-चरित्रबल गम्भीरता-शिक्षण योग्यता का यही मापदण्ड है जो इस गर्ग जैसे लोफर में हैं जो महापुरुषों को गंदी गालियाँ लिखना सीखा है। क्या कालेज की प्रबन्धक समिति इसकी द० गा० पुराण पुस्तक पर नोटिस लेकर कालेज के गौरव की रक्षा करने का यत्न करेगी ?

शैव मत

स्वामी दयानन्द जी महाराज के पिता शैव थे, अतः उनको इस मत के सम्बन्ध में पूरी जानकारी थी। सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में जहाँ अन्य हिन्दू मत में विद्यमान सम्प्रदायों का खण्डन उन्होंने किया है वहीं शैव मत पर भी संक्षेप में लिखा गया है। 'शिव' नाम जहाँ परमेश्वर का वाची है वहाँ पौराणिकों ने भूटान के राजा शिव की मानवाकृति में ईश्वर के रूप में पूजा करनी प्रारम्भ करदी है तथा शिव पुराणादि बनाकर उनको देवाधिदेव परमेश्वर बना डाला है।

तिब्बत के राजा को इन्द्र। भूटान के राजा को भूतनाथ शिवजी, मान सरोवर के क्षेत्र के राजा को क्षीर सागर निवासी विष्णु तथा हिमाचल के राजा को ब्रह्मा बनाया गया था। वस्तुतः इन प्रदेशों में

गद्दियों पर बैठने वाले राजाओं की यह उपाधियाँ थीं। जो गद्दी पर बैठता था वह उसी गद्दी की उपाधि से पुकारा जाता था। ये सब पर्वतीय राजा होते थे। इसका विवरण पुराणों तथा महाभारत में मिलता है। बाद को इन लोगों के नाम से शैव-वैष्णव आदि सम्प्रदाय देश में चालू हो गये जो आज भी विद्यमान हैं। इन सभी सम्प्रदायों ने देश में घोर पाखण्ड फैला दिये हैं तथा धर्म के नाम पर अनेक दुराचारों का प्रचार किया है। शराबखोरी-भांग गांजा सेवन-व्यभिचार आदि दुराचारों की जड़ देश में इन सम्प्रदायों से ही फैली है।

विपक्षी ने अपनी गन्दी पुस्तक में शैव मत पर भी कलम उठाकर स्वामी दयानन्द जी महाराज को गालियाँ दी हैं। हम यहां शैव मत कितना गन्दा है, यह दिखाते हैं जिससे पाठक समझ सकेंगे कि उसका खण्डन करना अनिवार्य था।

व्यभिचार प्रचारक शिवजी जिनके लिंग की पूजा मूर्ख विपक्षी करता रहता है विपक्षी के पूज्य ग्रन्थ शिव पुराण उमाँ संहिता अ० ४ में लिखा है (व्यभिचार प्रचारक शिवजी) "शिवजी की माया के प्रभाव से विष्णु ने काम में मोहित हो अनेक बार परस्त्री प्रसंग किया। ।१७। इन्द्र देवताओं के स्वामी ने गौतम की स्त्री पर मोहित हो पाप किया तो उस दुष्टात्मा ने गौतम का शाप पाया।१२। जगत में श्रेष्ठ अग्नि भी शिव की माया से मोहित होने से गर्व से काम के वशीभूत हुये, फिर शिव ने ही उनका उद्धार किया। १६। हे व्यास जी ! जगत के प्राण विष्णु भी शिव की माया से मोहित हो के काम के वशीभूत होने से परस्त्री से प्रेम करने लगे।२०। तीव्र किरणों वाले सूर्य भी शिव की माया से मोहित हो काम में व्याकुल हो के घोड़ी को देख कर शीघ्र ही घोड़े का रूप धारण करने वाले हुये । २१। शिव की माया से मोहित हुये चन्द्रमा ने भी गुरु पत्नी को हरण किया और शिव ने ही उनका उद्धार किया। २२। पहिले घोर तप से प्रवृत्त हुये मित्रा वरुणा नामक दोनों मुनि भी शिव की माया से

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 719

[illegible] देख दोनों काम से पीड़ित हुए। तब मित्र ने घड़े में अपना वीर्य छोड़ा और वरुण ने जल में छोड़ा। २३-२४। तब उस कुम्भ से मित्र के पुत्र वासिष्ठ जी तथा वरुण से बड़वानल के समान कान्ति वाले अगस्त जी पैदा हुए। २५। शिव की माया से मोहित ब्रह्मा के पुत्र दक्ष भी भाइयों सहित 'वाणी' के साथ भोग करने की इच्छा करने वाले हुए। २६। ब्रह्मा जी ने अनेक बार शिव की माया से मोहित हो आसक्त हुई अपनी पुत्रियों से भोग करने की इच्छा की थी। २७। शिव की माया से मोहित हो महायोगी च्यवन ऋषि ने भी काम में आसक्त हो अपनी कन्या में आसक्ति की। । २८। शिव माया से मुग्ध हो कर कश्यप ने भी काम के वश में हो अज्ञान से धन्वा राजा की कन्या भोगी। २९। मुग्ध हुए गरुड़ ने भी शांडिली की कन्या लेने की इच्छा की। ३०। शम्भु की माया से मुग्ध हुए गौतम मुनि ने भी शरद्वती को नग्न देख काम से व्याकुल हो, उसके साथ रमण किया। ३२। फिर उस तपस्वी ने निकले हुए अपने वीर्य को दौने में रखा जिससे शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य पैदा हुए। ३३। शिव की माया से मोहित हुए महायोगी पाराशर ने दास कन्या मत्स्योदरी से विहार किया। ३४। विश्वामित्र ने शिवमाया से मेनका से सम्भोग किया। ३५। काम से वशीभूत शिवमाया से हो कर ब्रहस्पति ने अपनी भाभी से विषय किया जिससे भारद्वाज पैदा हो गये। ३८॥ (नोट—संस्कृत श्लोक देखें 'शिव लिंग पूजा क्यों? पुस्तक में देख लेवें)

एक बार 'मोहिनी' स्त्री के पीछे शिवजी कामान्ध होकर उसे पकड़ने को भागे। रास्ते में भागते २ उनका वीर्यपात हो गया। वह वीर्य जहाँ जहाँ गिरा पृथ्वी पर सोने चाँदी की खानें बन गई। देखो (भागवत पुराण स्क० २३ अ० १२)

त्रिपुण्डधारी पतित होता है—

त्रिपुण्ड शूद् कल्पानां शूद्राणां च विधीयते ।
त्रिपुण्डधारणाद्विप्रः पतिते स्यान्नसंशयः ॥२०॥

पद्म पु० उ० खं० अ२५३॥

त्रिपुण्ड तिलकधारी ब्राह्मण पतित होता है। इसमें संशय नहीं है। त्रिपुण्ड शैवों का तिलक है। शिवजी का गुदा मैथुन करना—

मेढ्रे वज्रांस्त्वमादाय दानवन्तं शातयत् ।
अवध्यद्वीर कोनेव दानवन्तं निपूदितम् ॥१६॥

(मत्स्य पुराण अ १५५)

दैत्यपुत्र आदि के साथ अपने लिंग पर वज्रराव कर शिवजी ने मैथुन कर डाला जिससे वह मर भी गया। (सुना है विपक्षी गर्ग भी लड़कों से यह कुकर्म कराता है।)

शिवोऽपि पर्वते नित्यं कामिनी पाशसंयुतः।"

देवीभाग १।११॥

पर्वत पर शिवजी नित्य ही औरतों की बाहों में लिपटे रहते हैं।

दारुवन में शिवजी ने ऋषियों की पत्नियों के साथ घोर व्यभिचार किया जैसे विपक्षी राजेन्द्र गर्ग मेरठ की रण्डियों के साथ नित्य करता है। कथा शिव पुराण कोटिरुद्र संहिता अ १२ में पाठक देख सकेंगे। उसमें शिवजी लिंग हाथ में पकड़े हुए गए थे।

यह है विपक्षी का मान्य शैव मत और इसके पूज्य परमात्मा शिवजी का अति संक्षिप्त स्वरूप। विस्तार से हम लिखने बैठे तो शिवजी के भ्रष्ट चरित्र के वर्णन को कम से कम १००० पृष्ठ चाहिए।

शैव मत को स्वामी दयानन्द जी ने तो मात्र स्पर्श ही किया

है, उसी पर विपक्षी रोने लगा है। ज्यादा देखने के लिए वह हमारी शिवलिंग पूजा क्यों एक पुस्तक पढ़ सकेगा।

ऐसे शिवजी की कथायें भ्रष्ट पुराणों में भरी पड़ी हैं जिनको पौराणिक व विपक्षी व्यास कृत मानता है और उनको बदनाम करता है। व्यास जैसे योग्य विद्वान के द्वारा एक भी पुराण नहीं बनाया गया था यह पुराणों से ही सिद्ध है। पुराण-कार से स्वामी जी ने प्रश्न किया है। कि जब सृष्टि बनने का क्रम भी प्रारम्भ नहीं हुआ था और पञ्चभूतों की भी रचना नहीं हुई थी तब पुराणोक्त ब्रह्मा, विष्णु, महादेव आदि के शरीर जल-कमल लिंग, गाय आदि कहाँ से कैसे बन गए पौराणिक मानते हैं। इन सभी की रचना से पूर्व पञ्चभूतों का होना जरूरी था। इसका कोई उत्तर तो विपक्षी से बन नहीं पड़ा गालियाँ बकने लगा है। न जाने किस रिश्वतखोर ने ऐसे धूर्त को दर्शन विभाग में चपरासी बना दिया है। स्वामी दयानन्द जी के किसी भी तर्क को यह काट नहीं सका है।

शिवजी का निवास स्थान

बैकुण्ठ धाम इस पृथ्वी से १६ करोड़ योजन ऊपर स्थित है जहां सबको अभयदान करने वाले लक्ष्मीपति विष्णु जी निवास करते हैं। बैकुण्ठ की अपेक्षा १६ गुनी ऊँचाई पर शिवजी का निवास स्थान कैलाश धाम अवस्थित है अर्थात् पृथ्वी से २ अरब ५६ करोड़ मील ऊपर है, जहाँ गिरिराज, नन्दिनी, उमा, गणेशजी, कार्तिकेय जी तथा नन्दी आदि के साथ कल्याण स्वरूप भगवान विश्वनाथ शिवजी विराजमान हैं।

(संक्षिप्त स्कन्ध पुराण गीता प्रेस पृ० ५७६)

नोट–"शिवजी की मूत्रेन्द्रिय पूजा का विधान शिवलिंग पूजा क्यों एक पुस्तक में पढ़ें।

सारे सनातन पौराणिक तथा विपक्षी चिल्ला २ कर मर जाँय तब भी इन विदेशीय देवताओं तक उनकी आवाज नहीं पहुंच सकती है। पता नहीं सर्वव्यापक ईश्वर को छोड़कर विपक्षी इस कल्पित फर्जी देवता शिव के पीछे क्यों पड़ा है।

शिव की रण्डीबाजी

यहाँ शिवजी को रण्डीबाज बताने वाली एक कथा भी हम शिव पुराण से देते हैं। जिससे यह स्पष्ट हो जायेगा कि जैसे शिवजी थे वैसे ही उनके चेले शैव मतानुयायी होते हैं।

शिव पुराण शतरुद्र संहिता अ २६ में शिवजी के वैश्या-गमन की कथा दी है। किसी नन्दि ग्राम में एक बार शिवजी महानन्दा रण्डी के सौन्दर्य की प्रशंसा सुन कर गए। वहाँ उससे फीस तय की गई तो उसने शिवजी के हाथ में पड़ा सोने का कंकण माँग लिया, उसके बाद तीन दिन और तीन रात तक संभोग कराने को तैयार हो गई। वैश्या बोली—

दिन त्रय हो रात्रे पत्नी भूत्वा तव प्रभो।
सह धर्म चरामेति सत्यं सत्यं न संशयः ॥२५॥

तीन दिन और रातों तक मैं तुम्हारी पत्नी बनकर तुमसे खूब सम्भोग कराऊँगी नन्दी बोला—

इत्युक्त्वा हिमहानन्दा त्रिवारं शशि भास्करो।
प्रभातगी कृत्य सुप्रीत्या सातद् हृदयमस्पृशत ॥२६॥

यह कहकर उस रण्डी ने सूर्य चन्द्रमा की कसम खाकर शिवजी के दिल पर हाथ रखा या उनको छाती से लगा लिया।

सा तेन संगता रात्रे वैश्येन विऽधर्मिणी।
सुख सुष्वाय पर्यंके मृदु तुल्यो पशोभिते ॥२७॥

वह रण्डी वैश्य रूपी शिवजी के साथ मुलायम गद्दे तकियों वाले पलंग पर लेट गई और तीन दिन रात तक खूब व्यभिचार कराती रही।

विपक्षी जिस शिवजी व शैव मत का हिमायती है वह देखें कि वैश्यागामी देवताओं को ऋषियों को व्यभिचार में प्रेरित कराने वाला शिव व उसका अनुगामी उसका सम्प्रदाय कितना भ्रष्ट पुराणों के अनुसार है? ऐसे पाखन्डी गन्दे सम्प्रदाय का खुलकर खण्डन यदि स्वामी दयानन्द जी ने किया है तो गलत क्या है।

एक मेरठ के सज्जन ने बताया है कि रमा नाम की एक रण्डी मेरठ में स्वामी जी के भाषण सुनने जाया करती थी वह राजेन्द्र गर्ग के पड़बाबा की बहिन थी, उन्हीं के घर रहती थी और व्यभिचार का पेशा किया करती थी। स्वामी जी ने उसे व्याख्यानों में आने से रोक दिया था क्योंकि वह दुश्चरित्र थी। विपक्षी पता लगाकर बतायें कि यह बात कहाँ तक सत्य है? तुम्हारी तो वह खान्दान में दादी लगती थी। कहीं उसी के और पौराणिक शिवजी के प्रभाव से तो तुम मेरठ की रण्डियों के प्रेमी नहीं बने चले आ रहे हो?

शाक्त मत—

देवी के उपासक शक्ति मत की कुछ समालोचना सत्यार्थ प्रकाश के ११ वें समुल्लास में की गई है, उसमें वाममार्ग के भैरवी चक्र के पञ्चमकारों का स्पष्टीकरण किया गया है। भैरवी चक्र में मद्य, मांस, मीन-मुद्रा तथा मैथुन का क्रम चलता है।

एक जज साहब ने जो कभी बनारस में रहे थे तथा भैरवी चक्र में एक बार दर्शन के रूप में शामिल हुए थे उन्होंने हमको

बताया था कि उसमें शराब, गोश्त, मछली, पकौड़े तथा मैथुन का खुला क्रम चलता था। लिंग योनि की पूजा शराब व रोली चावल से की जाती थी-तथा अन्त में चोलियों का वितरण हो जाने पर रात भर घोर व्यभिचार होता था। रात भर किसी की बहिन बेटी पत्नी दूसरे के पास रहती थी। दिन निकलने पर सभी अपने २ जोड़ से मिल जाते थे। सत्यार्थ प्रकाश में पाठक विशेष पढ़ लेवें।

विपक्षी ने पञ्चमकारों के अर्थ पर आपत्ति की है तथा उल्टी सीधी कल्पना से नया अर्थ बनाया है। हम यहाँ वाममार्ग(शाक्तों) के ग्रन्थ कुलारावितन्त्र से स्थिति स्पष्ट करते हैं —

मद्य के बारे में लिखा है —

यावन्नेन्द्रिय वैकल्यं यावन्नो मुख मुख विक्रिया।
तावद्रयः पिवते मद्यं समुक्तो नात्र संशयः॥
पीत्वां पीत्वा पुनः पीत्वा यावद् पततिभूतले।
उत्थाय च पुनः पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

कुलारावितन्त्र उल्लास ७।

शराब को तब तक पीता जावे जब तक कि इन्द्रियों में विकलता न पैदा हो जावे, जब तक मुँह विकृत टेढ़ा न हो जावे तब तक पीते जाने वाला निश्चयः ही मुक्त हो जाता है। शराब को बार २ पीता जावे जब तक कि बेहोश होकर पृथ्वी पर गिर न पड़े उठने पर फिर भी शराब पीवे ऐसे शराबी शाक्त वाम-मार्गी का पुनर्जन्म नहीं होता है।

बिना माँसेन या पूजा बिना मद्येन तर्पणम्।
बिना शक्त्या तु यत्यानं निष्फलं कथितं प्रिये॥

कुलारावितन्त्र उ० ११।

कुर्यान्नवकुमारीणां पूजां मद्याजमांसकैः॥कुलरावि उ० १०।

बिना मांस के पूजा, बिना शराबके तर्पण, बिना शक्ति के मद्यपान निष्फल होता है। नई कुमारी कन्या की पूजा शराब और बकरे के मांस से करें।

मद्यं मांसञ्च मत्स्यश्च मुद्रा मैथुनमेव च।
मकार मञ्चमं देविः देवताप्रीति कारणम्॥

कुलाराविसन्त्र उल्लास १०॥

शराब, मांस मछली-पकौड़े तथा मैथुन करना, हे देवि! ये देवता को प्रसन्न करने वाले होते हैं।

मधु कुम्भ सहस्रैस्तु मांस भार शतैरपि।
न तुष्यामि वरारोहे! भग लिंगामृत बिना॥

कुलाराविउ० ८॥

हजारों घड़े शराब तथा सैकड़ों भार मांस हो तो भी हे देवि! मैं बिना भग लिंगामृत रजवीर्य अथवा विषय भोग के बिना संतुष्ट नहीं होता हूं।

वाम मार्गीय शाक्त धर्म के उपरोक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि शराब मांस मछली पकौडे तथा व्यभिचार शाक्त वाम मार्गीय धर्म है। उसका अन्य अर्थ खींचतान करके करना सम्भव नहीं है। ऋषि दयानन्द जो ने जो अर्थ लिखा है वह उस मत की व्यवहारिक मान्यता के ठीक अनुरूप है। शरीर में कुण्डलिनी सुषुक्ता आदि की स्थिति दूसरी बात है। पर शाक्तों का मद्य मांस मैथुन प्रथक बात है जिसका खण्डन उचित ही किया गया है। पाखण्ड फैलाकर सत्य को दबाया नहीं जा सकता है।

शाक्तों द्वारा देवी के सामने मनुष्यों की बलि दी जाती है, इसका विधान ब्रह्म वैवर्त पुराण प्रकृति खं० २ अ० ६४ में दिया गया है।

कर्तव्येयं महापूजा नाना बलि भिरादरात् ।
छाग मेषादि महिषैः सामिषान्नैस्तथैवय ।।

महा भागवत पु० अ०४६।१९।

आदर के साथ नाना प्रकार की बकरी भेड़ आदि के मांस व अन्न से बलि देकर देवी की पूजा करनी चाहिए ।

ऋषि दयानन्द जो महाराज जब पर्वतों में भ्रमण कर रहे थे तो एक बार एक ग्राम में पहुंच गए जो शाक्तों का था । वहाँ उन्होंने नर बलि की घटना स्वयं देखी थी जिसका उल्लेख उनके जीवन चरित्रों में दिया है ।

शराब मांस व्यभिचार देवी पर बलि देना यह शाक्तों का परम धर्म है । उसी महा भ्रष्ट शाक्त मत का किञ्चित दिग्दर्शन वाम मार्ग के खण्डन प्रकरण में सत्यार्थ प्रकाश में करते हुए इन वाम मार्गियों के भैरवी चक्र में शराब माँस मछली पकौड़े और घोर व्यभिचार क्रम का उल्लेख किया गया है । जिस पर विपक्षी ने पाखन्ड रचने का असफल प्रयत्न किया है ।

भगिनी वा सुतां भार्य्यां यो दद्यात् कुलयो गिने ।
मधुमत्ताय देवेभिः तस्य पुण्यं न गण्यते ।,

कुलार्णवि तन्त्र उ० ११।

अपनी बहिन बेटी या पत्नी को हे देवि ! जो व्यक्ति शराब में मतवाले को व्यभिचारार्थ भेंट कर देता है उसके पुण्य की कोई सीमा नहीं होती । यह प्रथा विपक्षी के परिवार में भी चालू है ।

अपेयमपि पेयं स्यादभक्ष्यंऽभक्षयेव च ।
अगम्यमपि गम्यं स्यात् कौलिकानां कुलेश्वरि ।।
न विधिर्न निषेधः स्यान्न पुण्यं न च पातकम् ।

न स्वर्गो नैव नरकः कौलिकानाँ कुलेश्वरि ।।

कुलारावि तन्त्र उ० ६।।

जो पीने व खाने योग्य न हो वा पोने खाने योग्य हो, जिन औरतों से सम्भोग जायज न हो उनसे भी सम्भोग करना वा भक्ष्या-भक्ष्य सभी कुछ खाना पीना इसमें कौलिकों के लिए कोई पाप या पुण्य विधि का निषेध कुछ भी नहीं होता है।

गुरुं स्मरन् पिवन्मद्यं खादन मांसं न दोषमाक।

कुलारावि तन्त्र उ० ६

गुरु का स्मरण करके शराब पीना और गोश्त खाने में कोइ दोष नहीं बताया गया है।

बिधिना गाँ द्विजं वापि हत्वा पापेनं लिप्यते ।।

कुलारावि तन्त्र उ० २।

विधि पूर्वक गाय या व्राह्मण की हत्या करने से कोई पाप नहीं लगता है। (क्योंकि यही सनातन धर्म है।)

व्रह्म हत्याशतं कुर्याद गुर्वाज्ञां प्रतिपालयेत् ।।

कुलारावि उ० १२।।

सैकड़ों व्राह्मणों की हत्या करके भी गुरु की आज्ञा का पालन करे।

मातृ योनि परित्यज्य विहरेत सर्वयोनिष ।।

केवल सगी माँ को छोड़कर हर स्त्री के साथ सम्भोग करो। क्योंकि—(सनातन धर्म में)

रजस्वला पुष्करं तीर्थं चाण्डाली तु स्वयं काशी चर्मकारी तु प्रयागः। स्याद्रजकी मथुरामता अयोध्या पुक्कासी प्रोक्ता ।।

रुद्रयामल तन्त्र।।

सारे तीर्थों का पुण्य नारी प्रसंग से मिल जाता है। रजस्वला से सभोग से पुष्कर तीर्थ, चाण्डाली से सम्भोग से काशी

जी चमारी से करने से प्रयागराज' धोबिन से सम्भोग करने से मथुरा तीर्थ तथा कञ्जरी से सम्भोग करने से अयोध्या तीर्थ करने का पुण्य प्राप्त होता है।

स्त्री गम्या है या अगम्या है इसे देखने की जरूरत नहीं है। तान्त्रिकों के लिए सभी कुछ जायज है, जैसा कि ऊपर दिखाया जा चुका है।

तान्त्रिकों की उपरोक्त स्पष्ट मान्यताओं के गुह्य या परोक्ष अर्थ इसलिए भी नहीं लिए जा सकते हैं क्योंकि प्रत्यक्ष व्यवहार में वे उपरोक्त लेख के अनुसार ही आचरण किया करते हैं। विपक्षी भी तान्त्रिक होने से भैरवी चक्र में अपनी पत्नी बहिन आदि के साथ शामिल होता रहता है और उनसे दूसरों का तथा स्वयं दूसरों की पत्नियों से अदला बदली में व्यभिचार कराना परम धरम समझता है। यदि कोई चाहे तो इसकी पुष्टि विपक्षी गर्ग से उसकी बीबी की कसम खिलाकर सत्यासत्य पूछ सकता है। विपक्षी बड़ा मूर्ख है जो भ्रष्ट तन्त्र ग्रन्थों के अर्थों की वेदार्थ पद्धति से सगति लगाने की बात करता है।

कबीर पन्थ

सत्यार्थ प्रकाश में ११ वें समुल्लास में स्वामी जी ने कबीर पन्थ की अति संक्षिप्त आलोचना की है जिसका खण्डन कोई कबीर पंथी तथा उसका वकील विपक्षी नहीं कर सका है। हमने कबीर पंथी की आर्य समाज तथा वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध "निरपक्ष सत्य ज्ञान दर्शन" तथा "तिमिरभास्कर पुस्तकों का मुँह तोड़ उत्तर कबीर मत गर्व मर्दन" पुस्तक में दिया है जिस पर किसी भी कबीर पन्थी का साहस कलम उठाने का नहीं हो सका है।

कबीर स्वयं ईश्वर विश्वासी नहीं थे। वे जगत कर्ता ईश्वर को नहीं मानते थे। और न जगत को पैदा हुआ मानते थे। एक दोहा उनका देखें—

कबीर ये जग जब नाहता, तब रहा एक भगवान।
जिन देखा यह नजर भरी, सो रहेऊ कौन मकान॥

जगत बनाने से पूर्व एक ईश्वर था यह जिसने देखा वह किस मकान में बैठकर देखा था?

यह प्रश्न सर्वथा मूर्खता पूर्ण है। कबीर वेद शास्त्रों के भी निन्दक थे। उनके चेले उनको नित्य परमेश्वर मानते है। उपासना का ढंग कान में उँगली लगाने पर जो नस नाड़ियों में रक्ताभिसरण क्रिया होती है उससे उत्पन्न शब्दों को अनहद नाद बताकर उसी का ध्यान करना ईश्वर ध्यान बताते हैं। सत्यार्थ प्रकाश में इनकी पोपलीला ठीक खोली गई है, विपक्षी जब उस पाखण्ड पूर्ण पोपलीला का समर्थन नहीं कर सकता है तो फिर रोता क्यों है? स्वामी दयानन्द जी पोल खोलने पर गालियां देने से तो कबीर पंथ का वह रक्षक नहीं बन सकेगा। उसकी जहालत उसके लेख से प्रकट होती है।

सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी जी ने लिखा है कि कबीर पंथियों की मान्यता है—

"ब्रह्मा, विष्णु, महादेव का जन्म भी जब नहीं हुआ था तब कबीर साहब थे। बड़े सिद्ध कि जिस बात को वेद पुराण भी नहीं जान सकते उनको कबीर साहब जानते हैं।"

क्या वेद निंदक पौराणिक देवताओं के विरोधी कबीर मत की इन पाखण्ड पूर्ण बातों का खण्डन न करके विपक्षी उनकी मान्यता साबित करता? कौन सा मूर्ख पौराणिक पोप है जो

ऊट पटांग बातों में विश्वास करता है? स्वामी दयानंद जी ने कबीर मत का उचित ही खण्डन किया है। कबीर या कोई भी हो वैदिक धर्म के विरुद्ध बकने वालों का सदैव मुख मर्दन आर्य समाज द्वारा किया ही जाता रहेगा। साथ ही आपके गंदे सनातन धर्म की ओर से स्वामी दयानंद जी व आर्य समाजियों को सदैव गालियाँ देकर उत्तर दिया जाता रहेगा जैसा कि पौराणिकों ने सदैव ऋषि महर्षियों को बदनाम करके किया है। हिंदुत्व के सच्चे दुश्मन तो तुम लोग ही हो। अवैदिक सिद्धांतों का खण्डन व सत्य का मण्डन करने की क्षमता किसी भी पौराणिक पोप में न कभी रही है और न आगे होगी क्योंकि तुम लोग मूर्खता के भक्त हो।

महाभारत के बाद देश में धार्मिक व्यवस्था भंग हो चुकी थी तब जिस साधु या विद्वान के मस्तिष्क में जैसा भी कुछ बैठा उसने अपनी समझ के अनुसार धर्म के स्वरूप का प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया था। शंकराचार्य का अद्वैत मत बाद को द्वैत, विशिष्ट द्वैत, अहं ब्रह्मास्मि, कबीर मत दादू राधास्वामी, स्वामी नारायण, बंगाल का ब्राह्म समाज, शैव, वैष्णव, शाक्त आदि मत और आज भी हंसा, ब्रह्माकुमारी रजनीश सम्प्रदाय उसी प्रकार फैला रहे हैं। जयगुरुदेव का भी पाखंड चालू है। गायत्री परिवार के नाम से मथुरा के श्रीराम शर्मा का भी सम्प्रदाय चलने लगा है।

गहरी दृष्टि से देखने पर यह सभी सिद्धान्त की दृष्टि से हिंदू समाज में विषैले फोड़े हैं, ईश्वर जीव प्रकृति वेदादि शास्त्रों, कर्म फिलासफी, मोक्ष आदि के बारे में कोई एक सर्व सम्मत मान्यता जो वैदिक धर्म से अविरुद्ध हो उनमें से एक की भी नहीं है। इसीलिए ईसाई मुसलमानादि लोग हिंदू

समाज की निश्चित मान्यताओं की धज्जियाँ उड़ाने को तत्पर रहते है।

आर्य समाज की निश्चित मान्यतायें हैं। हर सिद्धांत पर उसका निश्चित मत है जो अकट् तथा यवेद सम्मत है। इसलिए इन सभी अवैदिक मतवालों की गलत मान्यताओं का खण्डन हम लोग करते हैं। सत्यार्थ प्रकाश में वही सब कुछ लिखा गया है। इससे चिढ़कर गालियाँ देना धूर्तता है। यदि योग्यता है तो किसी भी सम्प्रदाय के पक्ष को लेकर विपक्षी शास्त्रार्थ आर्यसमाज से कर सकता है। शास्त्रार्थ से बचना और गालियाँ छापना तो सबसे बड़ा विपक्षी का गुण्डापन है, नीचता है।

नोट—राम सनेही पन्थ गुरु नानक जी, स्वामी नारायण मतों के बारे में ऋषि दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में पर्याप्त प्रकाश डाला है, विपक्षी एक भी प्रमाण को तो स्पर्श नहीं कर सका है, व्यर्थ गालियाँ बकता चला गया है। पाठक इनके बारे में सत्यार्थ प्रकाश में स्वयं विस्तार से पढ़ लेवें तो उचित होगा। विपक्षी के लेख में कोई उत्तर देने योग आक्षेप नहीं है। केवल धूर्ततापूर्ण गालियां ही दी गयी हैं। जो उसके नीच कुल के पूर्वजों की परम्परा रही है जिसका वह पालन कर रहा है।

ब्राह्म समाज

ब्राह्म समाज ईसाई धर्म से प्रभावित था। वेदों को ईश्वरीय ज्ञान नहीं मानता था। उसकी पुस्तकों में ईसमूसा नह आदि का उल्लेख होना उसकी पश्चिमी सस्कृति की ओर प्रवृत्ति का प्रमाण है। उनके साहित्य में भारतीय ऋषि मुनियों का कोई

उल्लेख न होने से ऋषि दयानन्द जी ने इस प्रवृत्ति की आलोचना की है जो सर्वथा उचित ही है। ब्राह्म समाज के साहित्य को पढ़ने पर हमारे बच्चों व देश वासियों पर पाश्चात्यों के धर्म का प्रभाव पड़ता है जबकि स्वधर्म से उनकी विरति होती है। अत्यधिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक उदारता के ही कारण भारत में मुस्लिम मस्जिदों को हिन्दुओं ने सहर्ष स्थान प्रदान किए थे जिसका प्रमाण है कि आज हिन्दू उनकी भूलों के लिए रोता है। किसी मुस्लिम या ईसाई धर्म ग्रन्थ में किसी भारतीय महापुरुष का नाम नहीं लिया गया है। कट्टर स्वदेशाभिमानी दयानन्द ब्राह्म समाज की इस गलत नीति को कैसे पसन्द कर सकते थे। जिन पूर्वजों की भूलों के कारण भारत पराधीन हुआ, विदेशी धर्म भारत में फले-फूले उनका परिमार्जन आवश्यक था। विपक्षी जैसे मूर्ख देश में आज भी कई लोग हैं जो मस्जिदों में जाकर नमाज पढ़ने में गौरव समझते हैं तथा कुरान बाइबिल के प्रशंसक है।

ऋषि के ग्रन्थों में यथा आवश्यकता आर्य ऋषियों का उल्लेख मिलता है विशेषकर अग्नि, वायु आदित्य तथा अङ्गिरा का जो सृष्टि के प्रारम्भ में वेद ज्ञान के मानव तक आने के माध्यम थे, जिससे सारे मानव को ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त होकर जीवन का मार्ग दर्शन मिला था। महर्षि मनु, याज्ञवल्क्य आदि के प्रमाण दर्शनकार ऋषियों का उल्लेख यथास्थान स्वामी जी ने निज ग्रन्थों में सगर्व किया है। पर विदेशीय लोगों का उल्लेख नहीं किया क्योंकि वे चरित्रों वा ज्ञान की दृष्टि से कुछ भी नहीं थे। कोई खुदा पैगम्बर बन बैठा था तो कोई खुदा का बेटा बन गया था। स्वामी जी के ग्रन्थ विश्व के मानवों के इतिहास ग्रन्थ नहीं हैं जिनसे सभी का उल्लेख किया जाता। विपक्षी

कितना मूर्ख है जो इतनी सी बात भी नहीं समझ पाता है। हिंदू समाज में जाति भेद तथा वर्ण भेद चिरकाल से चला आ रहा है। वर्ण भेद गुण कर्म स्वभाव पर आधारित है पर जाति भेद पेशों पर आधारित है। गान्धीजी भी छूआछूत को नहीं मानते थे। वैदिक धर्म में छूआछात स्वास्थ्य विज्ञान के आधार पर मानी जाती है वैसे नहीं। विपक्षी भी तो जातिभेद को मानता है तभी अपने को 'गर्ग' लिखता है। यदि नहीं मानता तो उसे गर्ग जाति सूचक शब्द नाम के साथ नहीं लगाना चाहिये था। इसीलिए तो हमने उसे महा मूर्ख लिखा है कि दूसरों को जिस बात के लिए कोसता है स्वयं वही कुकर्म करता है।

ब्राह्म समाज की मान्यताओं का विस्तृत अकाट्य खडन सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास एकादश में पाठक पढ़कर विपक्षी की धूतता को स्वयं देख लेवें।

ईसाई मत

बाइबिल के उत्पत्ति अध्याय के तीसरे पैरा में ईसाई ईश्वर में आदम व हव्वा को वाटिका के बीच के वृक्ष का फल यह कहकर खाने को मना कर दिया कि उसे खाने से तुम मर जाओगे। शैतान के कहने से दोनों ने उस वृक्ष का फल खा लिया था। फिर भी वे दोनों नहीं मरे किंतु उन्हें यह ज्ञान हो गया था कि वे दोनों नंगे हैं।

वृक्ष का फल खाने से मनुष्य ज्ञानवान बन गया तो खुदा ने उसे पहले मना क्यों किया था। और मरने का झूठा धोखा क्यों दिया था। फिर जब वे दोनों ज्ञानवान हो गए तो खुदा ने अप्रसन्न होकर इन्हें स्वर्ग से निकाल बाहर क्यों किया? क्या यह खुदा की मूर्खता नहीं थी? इससे तो खुदा धोखेबाज झूठा

व प्रपंची साबित हो जाता है। स्वामी दयानन्द जी ने भी तो यही लिखा है। विपक्षी ने स्वामी जी को असभ्य गालियां देकर अपना गुन्डापन क्यों दिखाया है ? क्या ईश्वर मनुष्य को विपक्षी की तरह सर्वथा मूर्ख ही बनाये रखना चाहता था ? यदि हो तो वह मानव जाति का शत्रु था, उसने मनुष्य को पैदा ही क्यों किया था ?

ईसाई ईश्वर भी अजीब खोपड़ी का था। बाइबिल में लिखा है —

और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य बनाने से पछताया और वह मन में अति खेदित हुआ ।७। तब यहोवा ने सोचा कि मैं मनुष्य को जिसकी मैंने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूंगा··· क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूँ। उत्पत्ति पैरा ६ ॥

"और यहोवा शाऊल का इस्राएल का राजा बनाकर पछताया। १ शैमुसल १५।२६।

बाइबिल में खुदा कहता है 'और मैं अपना जाल इस पर फैलाऊँगा और वह मेरे फन्दे में फँसेगा। और मैं उसको बाबुल में पहुंचा कर विश्वास घात का मुकद्दमा उससे लड़ूंगा, जो उसने मुझसे किया है।

। बाइबल यहडोकेल १७।

खुदा ने कहा 'परन्तु स्त्रियों और बाल बच्चे और पशु आदि की जितनी लूट उस नगर में हो उसे अपने पास रख लेना, और तेरे शत्रुओं की लूट जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे दे उसे काम में लाना ।१४। बाइबल व्यवस्था विवरण २०॥

विपक्षी देखे कि ईसाई खुदा झूंठा-मूर्ख (कर्म करके पछताने वाला)-औरतों बच्चों की लूट कराने वाला-अल्पज्ञ था या नहीं ? क्या ऐसा व्यक्ति सर्वज्ञ-सर्व व्यापक सर्व शक्तिमान ईश्वर माना जा सकता है ? स्वामी दयानन्द जी की आलोचना बाइबिल की सर्वांश में सही है। विपक्षी ने बाइबल भी नहीं पढ़ी है। कोरा ढपोल शंख है।

इकलौता बेटा

बाइबल में लिखा है 'क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास रखे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाये ।१६। यूहन्ना ३ ।

ईश्वर की तो सारी प्रजा उसकी पुत्र पुत्री हैं, क्योंकि वह सभी का पिता के समान पालन करता है। पर इकलौता बेटा का अर्थ तो यही होगा कि उसकी अन्य कोई सन्तान नहीं थी। तब यह प्रश्न समीचीन है कि उसके साले-सुसराल व पत्नी आदि भी होनी चाहिये ?

स्वामी दयानन्द जी का कटाक्ष पूर्णतया तर्क युक्त है। ईसाइयों की इस इकलौते पुत्र की मान्यता को ईसाई विद्वान भी नहीं मानने लगे हैं।

भाषा में गड़बड़ी

बाइबिल उत्पत्ति में पैरा ११ में खुदा ने लोगों की भाषा में इसलिये गड़बड़ी डाली थी कि वे लोग एक दूसरे की भाषा को न समझ सकें और उन्नति न कर सकें ऐसा स्पष्ट लेख है। उस पर स्वामी जी का ईसाई खुदा को दोषी लिखना पूर्णतः ठीक है।

बे मकान खुदा

ईसाई खुदा को सृष्टि का निमित्तोपादान लिखना भी विपक्षी की मूर्खता है। वह खुदा तो अपने रहने के लिये एक मकान तक नहीं बना सका था। इधर से उधर आवारा मारा मारा फिरा करता था। देखें। बाइबल में लिखा है—

।३। उसी दिन रात को परमेश्वर का यह वचन नातान के पास पहुँचा, जाकर मेरे दास दाऊद से कह ।४। यहोवा (खुदा) यों कहता है, कि मेरे निवास के लिये तू घर बनाने न पायगा ।५। क्योंकि जिस

दिन में इस्राएलियों को मिश्र से ले आया, आज के दिन तक मैं कभी घर में नहीं रहा, परन्तु एक तम्बू से दूसरे तम्बू को और एक निवास से दूसरे निवास को आया जाया करता हूँ ॥ १ इतिहास १७ ॥

तो जो खुदा अपने रहने को एक मकान भी न बना सका उसे दुनियां बनाने वाला निमित्तोपादान कारण कोई गर्ग जैसा अक्ल का दुश्मन ही मान सकता है। दयानन्द जी की आलोचना सत्य ही है। विपक्षी बाइबल जैसी गपोड़ों से भरी हुई पुस्तक पढ़ कर देख लें।

अखाड़ मल्ल

स्वामी जी ने ईसाई खुदा को अखाड़ मल्ल ठीक ही कहा है। वह रात भर याकूब से कुश्ती लड़ता रहा और कुश्ती बराबर पर छूटी, दोनों में से कोई भी नहीं हारा। इस पर खुदा ने कहा "उसने कहा तेरा नाम अब याकूब नहीं परन्तु इस्रायल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है।२२ उत्पत्ति ३२ ॥

स्वामी दयानन्द जी को अपशब्द लिखने वाला महा धूर्त विपक्षी बतावे कि ईसाई खुदा को जब बाइबल ने ही अखाड़े का मल्ल बताया है वह कुश्ती लड़ता था तो स्वामी जी ने भी जब वही बात लिख दी तो विपक्षी ने अपशब्द क्यों लिखे हैं? विपक्षी, गुण्डा इसी से साबित है।

मूसा का चरित्र बाइबल में से सत्यार्थ प्रकाश में देकर जो समीक्षा वहां दी है पहिले विपक्षी उन उद्धरणों का खण्डन करके अपनी योग्यता दिखावे। सत्यार्थ प्रकाश में मूल उद्धरण सब ठीक हैं और उन पर समीक्षायें सही हैं। विपक्षी एक भी प्रमाण नहीं काट सका।

मरियम क्वारी स्त्री थी, उसी दशा में गर्भवती हो गई। उसकी शादी यूसुफ बढ़ई से कर दी गई। उसने उसे सगर्भा पाया तथा निकाल देने की बात सोची। स्वप्न में उससे फरिश्ता ने कहा गया कि

निकालना मत, वह पवित्रात्मा (शरीफ व्यक्ति) से गर्भवती है, यहूदी कानून के अनुसार मरियम को पत्थरों से मार डाला जाता, पर यूसुफ को दया आ गई। उसने उसे निभा लिया। ईसा मसीह का जन्म हो गया। यह सब कुछ बाइबिल में इम्नील में दिया है। (देखो मत्ती १।१८ से २४ तक) ईसा भी बिना प्रत्यक्ष बाप के विपक्षी की तरह बिना बाप के ही पैदा हुआ था।

क्वारी कुन्ती के कर्ण पैदा होना, बिधवा ब्राह्मणी से आक्ष्य शंकराचार्य का जन्म होना आदि सभी घटनायें एक जैसी हैं। विपक्षी गर्ग का जन्म क्या ऐसे ही नहीं हुआ यह बात हम तो नहीं जानते, शायद मेरठ के लोग जानते होंगे। पर ये जन्म अयोनिज नहीं थे। अपनी ही तरह विपक्षी का उसे अयोनिज मानना मूर्खता है। ये सब योनि में होकर ही जन्मे थे सम्भवतः विपक्षी आकाश से टपक पड़ा था, वह मां के पेट से नहीं पैदा हुआ था या गटर के हरामी होने से नाले में बहता हुआ पड़ा मिला होगा।

विशेष जानने के लिये देखो पुस्तक 'ईसा और मरियम'। ईसाई मत तथा बाइबिल नानास्वरूप देखने के लिये हमारी पुस्तक "बाइबिल दर्पण" देखनी चाहिये। ईसा मसीह १४ वर्ष तक (१७ साल की उम्र से ३१ साल की आयु तक) भारत में रहे थे। उन्होंने तन्त्र तथा बौद्ध धर्म की भी शिक्षा ली थी, फिर स्वदेश जाकर अपने विचारों का प्रकार किया था। पहाड़ी उपदेश उनके पूर्ण तथा बौद्ध मत पर आधारित हैं। वे निर्धन तो थे ही, पर अपनी धुन के धनी थे। वहां अपना राज्य कायम करना इनका लक्ष्य था, और इसी के लिये उन्होंने शस्त्र संग्रह करने का भी आदेश दिया था। प्रत्येक पदार्थ में ईश्वर का सर्व व्यापक होने से वास है यह वे नहीं जानते थे। वे तौरात-जबूर इतिहास आदि की पुस्तकें जो बाइबिल का पुराना धर्म नियम है उसे मानते थे। मांसाहारी थे शराब भी पीते थे। ईश्वर के स्वर्ग

निवासी मानते थे जहां २० करोड़ घुड़सवार फौजें ईश्वर की रक्षा को रहती हैं। (प्रकाशित वाक्य ६।१६) तथा १२ से भी ज्यादा फरिश्तों की पल्टनें युद्ध के लिए हर समय तैयार खुदा के पास रहती हैं (मत्ती २६/५२)।

ईसा ने स्वयं कभी कोई पुस्तक नहीं लिखी थी। बाइबिल की इम्जील भाग की २७ पुस्तकों का संग्रह ईसा के मरने के लगभग पौने तीन सौ वर्ष बाद किया गया था। इसीलिये इम्जील सर्वथा प्रमाणिक पुस्तक नहीं है।

धनवानों को स्वर्ग नहीं मिलेगा यह वाक्य सही नहीं है। उसमें क्या दोष है यह नहीं खोला गया है। वेद में तो सभी को 'श्याम पतयो रयीण म्' हम धनों के स्वामी बनें, यह प्रार्थना है। प्रश्न तो सत् या असत् कर्म करने का है। अपनी शक्ति धन संपत्ति आदि को अच्छे कर्मों में लगाने का है। पौराणिक ग्रन्थों में राजाओं के स्वर्ग जाने की कथायें आती है, तब क्या पौराणिक विपक्षी उन सभी ग्रन्थों को गप्पाष्टक मानता है? धन नेक कर्म करने में बाधक नहीं होता है और निर्धनता रोटी-कपड़ा और मकान मांगने वालों की साधक नहीं होती है। प्रभु में तन्मय होना, जीवन व्यापार को ठीक से संचालित करना· कर्तव्य कर्मों को धर्म पूर्वक पालन करना आदि सभी गुण निःश्रेयस प्राप्ति के मार्ग के सहायक हैं। और गीता तो अनेक जन्म से सिद्धि ततो यान्ति परांगतिम्'।

कई जन्मों के प्रयत्न से केवल योगी पुरुष को ही मोक्षाधिकारी मानती है क्या विपक्षी बाइबिल को गीता से भी उत्तम मानता है? और गीता को झूँठी मानता है?

कठोपनिषद तथा बृहदारण्यकोपनिषद के प्रमाण तो, यह बताने के लिये हैं कि संसारिक वैभव नाशवान है, ईश्वर अमर है अतः उसी की उपासना करनी चाहिये। यह कहां लिखा है कि धनवान मुक्ति को नहीं पा सकेंगे। कभी फूटी आँखों से उपनिषद् पढ़ें भी है।

मेरठ की वेश्याकुलों से सम्बन्धित रहने के कारण मूढ़ विपक्षी यह भी समझने में असमर्थ रहा है ।

ईसा बढ़ई तो था ही, यदि नहीं था तो क्या तुम्हारे कुल का तुम्हारा पड़ बाबा लगता था और बनिया था ? उस युग के जंगली लोगों में ही ईसाई मजहब फैला था । विपक्षी ने तो मेरठ की रण्डियों के प्रभाव के कारण केवल गाली बकना ही सीखा है । उसने बाइबिल को नहीं देखा है । यदि उसका तो व्यवस्था अध्याय पढ़ लेता तो यहूदी खुदा को साक्षात राक्षस कहने लगता यहूदी व ईसाई एक ही मत के मानने वाले हैं ।

ईसा के दो पत्नियां थीं यह विवरण "एक्लैसैस्टीकल जर्नल" में छप चुका है । अतः ईसा को स्त्रैण कहना गलत नहीं है । ईसाई मत के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिये हमारी 'बाइबल दर्पण' को विपक्षी पढ़ सकता है । सम्पूर्ण बाइबल (ईसाई मत) का नग्न स्वरूप उसमें मिलेगा ।

इस्लाम तथा कुरान

कुरान व इस्लाम की वकालत में भी विपक्षी ने बहुत कुछ बक-वास की है आज तक गत एक सौ वर्षों में कोई भी मुसलमान सत्यार्थ-प्रकाश के चौदहवें समुल्लास में कुरान की ऋषि दयानन्द द्वारा की गई समालोचना का उत्तर देने में सफल नहीं हो सका है यही क्यों, अनेक मस्जिदों के इमाम व अन्य मुस्लिम विद्वान उसे पढ़ कर इस्लाम त्याग कर वैदिक धर्म में आ चुके हैं । वे कुरान को अवैज्ञानिक एवं बुद्धि विरुद्ध सिद्धान्तों का संग्रह मानते वर्णित करते हैं । जिला मेरठ के बरनाला की जामा मस्जिद के इमाम श्री महबूब अली खां भी शुद्ध होकर पं० महेन्द्रपाल बन चुके हैं ।

पर यह नया कुरान का चेला जिसने कभी फूटी आंखों से कुरान नहीं देखा है उसकी ऊट-पटांग प्रशंसा करने पर उतर पड़ा है । हम

यहाँ कुरान की वस्तु स्थिति संक्षेप में दर्शने का यत्न करते हैं जिससे इस नौ सखिये मुस्लिम झूठे इस्लामी कुत्ते की मूर्खता का पर्दाफाश हो सकेगा ।

इसने कुरान को अपौरुषेय अर्थात् ईश्वरीय ग्रन्थ लिखा है जबकि कुरान में उसे किसी मनुष्य का लिखा हुआ प्रगट किया गया है । जैसे

कुरान खुदाई नहीं

(१) "खुदा के सिबाय किसी की पूजा मत करो । मैं उसी की ओर से तुमको डराता और खुशखबरी सुनाता हूँ ।"

कुरान पारा ११ सूरे हूद आयत २ ॥

इसमें खुशखबरी सुनाने व डराने वाला खुदा न होकर कुरान लेखक कोई दूसरा मनुष्य है, यह स्पष्ट है ।

(२) "खुदा की कसम है तुमसे पहिले हमने बहुत सी उम्मतों (गिरोहों) की तरफ पैगम्बर भेजे.....।"

कु० पा० १४ सूधहल रुक० ८ आ० ६३ ॥

इसमें खुदा की कसम खाने वाला आदमी खुदा से प्रथक दूसरा है जो कुनरा लेखक है ।

(३) "और इन्कारी कहने लगे कि हमको वह घड़ी न आवेगी । पोशीदा बातों के जानने वाले अपने परवर्दिगार की कसम जरूर आवेगी । ॥ कु० पा० २२ सू० सवा आ ३ ॥

इसमें खुदा की कसम खाने वाला कुरान लेखक खुदा न होकर मनुष्य सिद्ध है ।

(४) "तेरे परवर्दिगार की कसम हम इनसे जरूर पूछेंगे ।"

। कु० पा० १४ सू० हिज्र आ० ९२ ।

इसमें भी कसम खाने वाला कुरान लेखक कोई आदमी है, खुदा नहीं ।

(५) 'से मुहम्मद ! खुदा तुझे माफ करे।" कु०सू०तौबाआ०४३॥

इसमें भी मुहम्मद को माफ करने की प्रार्थना करने वाला कुरान लेखक कोई आदमी है।

(६) "खुदा इनको गारत करे किधर को भटके चले जा रहे हैं।"

सू० तौबा आ० ३०।

(७) "मैं पूरब और पश्चिम के परवरदिगार की कसम खाता हूँ कि हम उस पर सामर्थ रखते हैं।"

कु० पा० २६ सू० मआरिज आ० ४०।

इसमें खुदा की कसम खाने वाला कुरान बनाने वाले को खुदा नहीं बल्कि कोई आदमी साबित करता है।

(८) "शुरू करता हूँ साथ नाम अल्लाह के.....।"

। कु० सूबकर आ० १।

कुरान लिखने वाला इस आयत में भी खुदा से जुदा कोई आदमी था यह स्पष्ट है।

इसी तरह के अनेक प्रमाण दिये जा सकते हैं जिनसे स्पष्ट है कि कुरान किसी आदमी का बनाया है, वह ईश्वरीय ग्रन्थ नहीं है जैसा कि विपक्षी ने उसकी झूठी प्रशंसा में लिख मारा है। कुरान की प्रशंसा करने वाला विपक्षी किसी मुसलमान से पैदा हुआ कल्मी लगता है।

स्वामी जी ने कुरान की प्रशंसा कुरान में लिखने पर अरबी खुदा को दम्भी लिखा है विपक्षी को उस पर ऐतराज है। जरा निम्न प्रमाण कुरानी की गल्पों के देखें—

सच्चे कुरान की कसौटी

"और अगर कोई कुरान ऐसा होता जिससे पहाड़ चलने लगते या उससे जमीन के टुकड़े हो सकते या उससे मुर्दे जी उठें और बोलने लगें तो वह यही होता...।३१।कु०पा० १३ सू० राद रु० ४॥

यह आयत कुरान को बिलकुल गलत और उसके लेखक अरबी खुदा को झूठा धोखेबाज और कम समझ घोषित करती है। वरना इस कुरान से पहाड़ों का चलना और मुर्दों का जिन्दा होकर बोलना कोई मौलवी या उसका नालायक वकील विपक्षी सही साबित करके दिखावे। दयानन्द जी ने जो कुछ लिखा है वह अक्षरशः सत्य है। संसार का कोई भी विद्वान उसे काट नहीं सकता है। विपक्षी की तरह गालियां देने की मूर्खता कोई मुसलमान भी आज तक नहीं कर सका है।

ऊट पटांग बातें

कुरानी खुदा की अक्लमन्दी की बातों के कुछ नमूने और देखें—

'और जब जमीन तान दी जावेगी और जो कुछ उसमें है बाहर डाल देगी और खाली हो जायेगी और खुदा की बात सुनेगी, यह तो उसका फर्ज ही है।" (कु० सू० इन्शिकाक आ० २)

"जब सितारे झड़ पड़े।"

कु० सू० इन्फितार आ० २॥

"हमने पहाड़ों को जमीन में गाढ़ दिया।"

कु० सू० नाजियात आ० ३२॥

"आसमान में ओलों के पहाड़ जमे हुए हैं।"

कु० सू० नूर आ० ४३॥

'आसमान बिना खम्बों के खड़े किये।"

कु० सू० लुकमान आ० १०॥

"आसमान जमीन पर गिरने से रुका है।"

कु० सू० हज्ज आ० ६५॥

"आसमान और जमीन पिण्ड सा था, उसको तोड़कर जमीन और आसमान को अलग २ कर दिया।"

कु० सू० अम्बिया आ० ३०॥

"उसी ने मनुष्य को पपड़ी की तरह बजती हुई मिट्टी से पैदा किया।"

कु० सू० रहमान आ० १४॥

जिस दिन आसमान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तुमार में कागज लपेलते हैं।

कु सू० अम्बिया आ० १०४॥

"आसमान में दरवाजे भी हैं।"

कु० सू० हिज्र आ० १४॥

इन आदम के बेटों को हमने लसदार मट्टी से पैदा किया।

कु० सू० साफ्फात आ० २२॥

स्वामी दयानन्द जी को गाली देने वाला महामूर्ख विपक्षी देखें कि कुरान के खुदा का ज्ञान कितना था। इन गल्पों को ठीक मानने वाला होने से तो विपक्षी साधारण पढ़ा लिखा भी नहीं प्रतीत होता। क्या यही सृष्टि उत्पत्ति प्रलय का विज्ञान है? पहाड़ जमीन में से उभर कर ऊपर उठते हैं या उसके ऊपर से गाढ़े जाते हैं, कुरानी खुदा इतना भी नहीं जानता था। जमीन आसमान का पिण्ड बताना, तारों का झड़ पड़ना लिखना, ओलों के पहाड़ों का जमा होना आसमान में लिखना आदि बातों को देखकर स्वामी जी ने यदि खुदा की कटु आलोचना कर दी या कुरान को अविद्या की पुस्तक लिख दिया तो क्या गलत किया। कैसी जाहिल है विपक्षी कि सत्य कहने वालों को गाली देता है और गलत किताबों की हिमायत करता है।

विपक्षी तो कुरान में इगलाम वाजी का समर्थन देखकर उसकी भी हिमायत करते हुए भी नहीं शर्माता है।

कु० सूरते वकर पा० २ रु० कू० २८ आयत २२२ में अरबी खुदा कहता है "तुमसे हैज की बावत पूछते हैं तो समझा दो कि वह गन्दगी है। हैज के दिनों औरतों से अलग रहो और जब तक पाक न हो तो उनके पास न जाओ। फिर जब नहा धो लो तो जिधर से जिस

प्रकार अल्लाह ने तुमको बता दिया है उनके पास जाओ। बेशक अल्लाह तौबह करने वालों को दोस्त रखता है.....।२२२॥

उस जमाने में अरब में इगलामबाजी का शौक होता था, शायद अब भी है। लोग औरतों से भी गुदा मैथुन किया करते थे। इस आयत के लिखे जाने से लोगों में क्रोध भड़का था और इन्होंने ह० मुहम्मद साहब से उसे प्रगट कर दिया था। तो तुरन्त दूसरी आयत बना दी गई जो निम्न है—

गुदा मैथुन का समर्थन

"तुम्हारी बीबियां तुम्हारी खेतियां हैं अपने खेत में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिये आयन्दा का भी बन्दोवस्त रखो और अल्लाह से डरो और जाने रहो कि उसके सामने हाजिर होना है। (ऐ पैगम्बर!) ईमान वालों (मुसलमानों) को खुशखबरी सुनादो॥ २२३॥

इसमें इस खबर को खुशखबरी बताकर प्रसारित करने को भी कह दिया गया है। इस आयत पर शाह अब्दुल कादिर साहब दिल्ली ने अपने कुरान में हाशिये पर जो हदीस छापी है उसमें स्पष्ट रूप से गुदा मैथुन का समर्थन किया है। तथा 'हफवातुला मुसलमीन' पुस्तक में पृ० ४०-४१ पर उसके लेखक शहजादा मिर्जा अहमद सुल्तान मुस्तफी चिश्ती ने भी स्पष्ट रूप से लिखा है 'औरतें तुम्हारी खेती हैं जिधर से चाहो जाओ और अपने नफसों का चाहाना करो।"

इस नालायक विपक्षी ने कभी कुरान तो देखा नहीं पर बैठ गया है उसकी बेहूदी गन्दी बातों का समर्थन करने और स्वामी जी को गालियां देने।

जैसे वेश्या कभी व्यभिचार को बुरा न बता कर उसकी प्रशंसा ही करती है वैसे ही यह धूर्त विपक्षी औरतों से व लोंडों (जनती गिलमों) से अप्राकृतिक व्यभिचार का समर्थन कर रहा है क्योंकि उसके पूज्य शंकर जी ने भी दैत्य पुत्र आदि के साथ यही कुकर्म (गुदा मैथुन) करके उसे मार डाला था। (देखो मत्स्य पुराण अ०१५५)

इस धूर्त को इस इस्लामी कुकर्म को 'शत प्रतिशत शास्त्रानुकूल' लिखने में शर्म भी नहीं आई। हम कहते हैं कि यदि उसमें दम है और माँ का दूध पिया है। (किसी कुतिया या रण्डी का नहीं) तो कुरान की इगलामवाजी को सनातन धर्म के पुराणों से समर्थन करके दिखावे। इस्लाम में तो 'जन्नत में लौंडेबाजी होगी' दरमुख्तर मिश्री जिल्द ३ सुफा १७१ ॥ पर लिखा है। उसी का अभ्यास विपक्षी की तरह मियाँ लोग यहां भी करते हैं।

जन्नत वेश्यालय है

अब जरा मुसलमानी जन्नत को वेश्यालय होने का हाल भी सुन लो। खुदा-मियां जन्नत की बैठक में रहते हैं—देखो कुरान पारा २७ सू० कमर आ० ५४–५५॥ में लिखा है "परहेजगार (मुसलमान) जन्नत में बागों और नहरों में होंगे ।५४। सच्ची बैठक में बादशाह (खुदा) के पास जिसका सब पर कब्जा है। ५५ ॥"

जन्नत में हूरों का हाल भी कुरान से देख लेवे—

(जन्नत में) पाक हूरें होंगी जो आँख उठाकर भी नहीं देखेंगी। और जन्नत वासियों से पहले न तो किसी आदमी ने उन पर हाथ डाला होगा और न जिन्नते। ५६ हूरें जो खीमें में बन्द हैं। ७२ सूरहमान। हूरें बड़ी २ आंखों वाली जैसे छिपे हुए मोती ।२३। हमने हूरों की एक खास सृष्टि बनाई है।३५। फिर उन्हें कुमारी बनाया है। ३६। प्यारी-प्यारी समान अवस्था वाली ।३७। । कु०सू० वाकिया ॥

हर मुसलमान मर्द को कितनी औरतें जन्नत में मिलेंगी, इसका हिसाब भी हैरत देहलवी ने अपनी किताब मुकद्माये तफसीरुल्कुरान में पृ० ८२ पर देते हुए लिखा है कि हर एक

मियाँ को ५०० हूरें, ४००० क्वारी औरतें व ८००० व्याहता औरतें मिलेंगी। इसके अलावा वहाँ एक बाजार होगा जहाँ हुस्न का व्यापार होता होगा और सुन्दरी रण्डियां संभोग के लिये लोगों के लिए तैयार मिला करेंगी।

जन्नत में मर्द अकेला खुदा रहता है और फी मर्द के लिये १२५०० औरतों के हिसाब से जमीन के अरबों मुसलमानों के लिये बेशुमार औरतें वहां रहती हैं। तब स्वामी दयानन्द जी का जन्नत को वेश्यालय लिख देना क्यों गलत है।

इस्लाम के प्रसिद्ध विद्वान अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के संस्थापक सर सैयद अहमद खां ने अपनी किताब "मुकद्माये कुरान" में भी पृ० ३३ भाग १ पर लिखा है कि इस्लामी जन्नत रूपी वैश्यालय से भारत के वैश्यालय ज्यादा अच्छे हैं।

ऐसे जन्नत में रहने वाले खुदा को भी स्त्रैण लिख देना क्या गलत है। जन्नत शब्द जन से बना है जिससे जनाना जनानी बना है। जन्नत का अर्थ वह स्थान है जहाँ केवल औरतें ही रहती हैं। जनान खाने में रहने वाले भी जनाने ही होते हैं। विपक्षी कैसा मूर्ख है जो इतनी सी बात भी नहीं समझता है।

अगर विपक्षी स्वप्न में भी इस्लामी जन्नत में पहुँच गया तो हूरों की चप्पलों की मार से खोपड़ी के बाल उड़ जावेंगे और मुस्लिम गिल्मों की ठोकरों से कमर का कचूमर निकल जावेगा।

स्वामी जी ने कुरान में खुदा द्वारा लूट का समर्थन करने पर कटाक्ष करते हुए खुदा को व मुसलमानों को लुटेरा आदि लिखा है तो विपक्षी को वह भी बुरा लगा है। कुरान में खुदा ने अपना पैगम्बर का हिस्सा (लूट के माल में लूट का पाँचवां

हिस्सा) नियत कर रखा है जैसे कि डाकुओं के सर्दारों का हिस्सा उनको मिलता है लूट में धन सम्पत्ति के साथ औरतों की भी लूट कुरान समर्थित है और वे भी अरबी खुदा को मिलती होंगी। ऐसे खुदा की आलोचना भी इस कठमुल्ले विपक्षी को वर्दाश्त नहीं हो सकी है और गालियां बकने बैठ गया है। पता नहीं किस बेवकूफ ने इसे इस्लाम की दीक्षा दी है। इससे तो मुसलमान आलोचक ठीक है जो जवाब न बनने पर चुप रह कर अपनी मूर्खता को प्रगट नहीं होने देते हैं।

मुसलमानों की धूर्तता-हिन्दुओं का कत्लेआम-धोखाधड़ी-लूटमार आदि के लिये इतिहास साक्षी है तथा विपक्षी के नगर मेरठ के हिन्दू मुस्लिम बलवे स्वयं प्रमाण हैं। कुरान में तो अपने पड़ोसी गैर मुसलमानों से लड़ने उन पर सख्तियां करने और उनको मुसलमान बनाने के अनेक आदेश हैं।

लूट के माल में खुदा का हिस्सा

लूट का $\frac{1}{5}$ खुदा को दो। और जान रखो जो चीज तुम लूट कर लाओ उसका पांचवां हिस्सा खुदा को दो उसके पैगम्बर के रिश्तेदारों का अनाथों-गरीबों और मुसाफिरों का है। (कु० सू० अनफाल आ० ४१)

"जो औरतें लूट में कैद होकर तुम्हारे हाथ लगी है उनके लिये खुदा का हुक्म है।" कु० सू० निसा आ० २३।

काफिरों को कत्ल करो।

काफिरों को कत्ल करो

"काफिरों से लड़ते रहो; यहां तक कि फसाद न रहे और सब खुदा ही का दीन हो जाय कु० पा० ९ सू० अनफाल रु० ४ आ० ३९।। जब अदब के महीने निकल जावें तो मुशरिकों को जहां पाओ कत्ल

फिरो । उनको घेर लो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो । ।७३। मुसलमानो ! आस पास के काफिरों से लड़ो और चाहिये कि वह तुमसे सख्ती मालूम करे । १२३। कु०पा० १० सू० तौबा ।

ऐसे जहरीले आदेश जिस मजहबी किताब कुरान में हों उसके मानने वाले झगड़ालू-फिसादी-कातिल-बेरहम क्यों नहीं होंगे और वह खुदा जो ऐसे आदेश देता है शरीफ कैसे माना जा सकेगा । स्वामीजी ने उसे गलत खुदा लिखकर ठीक ही किया । ऐसी भ्रष्ट बातों का समर्थन विपक्षी जैसा किसी मुसलमान के दूषित वीर्य से उत्पन्न महामूर्ख ही कर सकेगा जो नम्बरी गुन्डा होगा ।

खुदा धोखेबाज था

कुरान में खुदा को धोखेबाज लिखा है तथा मुसलमानों ने इतिहास में धोखेबाजी की है प्रमाण—"और जब धोखा बनाने लगे काफिर तुझको बैठा दे या मार डाले या निकाल दे और वह धोखा करते थे और अल्लाह भी धोखा करता था और अल्लाह का धोखा देना सबसे बेहतर है ।" कु० सू० अनफाल आ० ३० ।

कुरान में कई स्थानों पर खुदा को धोखेबाज फरेबी लिखा है तो स्वामी दयानन्द जी ने यदि खुदा को कुरान के अनुसार धोखेबाज लिख दिया तब क्या बुरा किया । मुसलमान और खुदा एक जैसे रहे हैं ।

मुसलमान और उनका कुरानी खुदा सब एक जैसे रहे

कुरान का सिद्धान्त हर प्रकार का प्रलोभन देकर या भय दिखाकर लोगों को इस्लाम में दीक्षित करना है । उसी में कुरान मे जो लोग मुसलमान बन जावेंगे उनके सभी पाप खुदा माफ कर देगा, यह प्रलोभन भी दिया है ।

क्षमा से पाप बृद्धि

इस पर स्वामी जी ने लिखा है कि पाप नाश कर देने के खुदा के बायदे से लोगों में पापाचार के प्रति निःशंकता पैदा होकर दुष्ट कर्मों में प्रवृत्ति बढ़ेगी। हिंदुओं में भी ऐसी ही बेतुकी बातें प्रचिलित हैं कि अमुक सम्प्रदाय में आने से या माथे पर तिलक लगाने से, गंगा गंगा जपने से; शिवलिंग दर्शन से पाप दूर हो जाते हैं। इन सभी साम्प्रदायिक प्रलोभनों के होते हुए भी हिंदू आर्य ग्रन्थों ने स्पष्ट रूप से घोषणा की है कि

"अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्"

अर्थात् कृत कर्मों का फल तो सभी को भोगना पड़ता है, उससे बचा नहीं जा सकता है। फिर भी ऐसी प्रर्थनायें धर्म-शास्त्रों में हैं कि प्रभो हमारे पापों को नष्ट कर दो, हमको उनसे मुक्त कर दो।

इन प्रार्थनाओं का प्रभाव यह होता है कि मानव की आगे अधर्म युक्त कर्मों को करने की प्रवृत्ति नष्ट होती है, उसमें कृत कर्मों के लिए पश्चाताप पैदा होता है तथा स्वभाव में पवित्रता आने लगती है। वह अपने गुण कर्म स्वभाव अपने पवित्र इष्ट-देव के जैसे बनाने का यत्न करने लगता है, स्वभाव में से अभिमान मिटकर मृदुता आ जाती है। संखिया विष खाकर उसके प्रभाव को प्रार्थना से नहीं दूर किया जा सकता है। दुष्कर्मों के करने पर जो संस्कार चित्त पर पड़ जाते हैं उनको प्रार्थना से नहीं मिटाया जा सकता है। अरबी खुदा यदि पाप माफ कर सकता था तो फिर केवल मुसलमानों के ही क्यों करता था, हर व्यक्ति के लिए शुद्ध मन से प्रार्थना करने पर क्षमा करने का रास्ता खुला रहना चाहिए था। खुदा को केवल

इस्लाम का ठेकेदार वा पक्षपाती बनना तो उसकी खुदाई में बट्टा लगाने वाली बात है।

स्वामी दयानन्द जी का लेख सही है कि गुनाह बिना भोगे नष्ट नहीं होते हैं [ईश्वर के किसी भी नाम से पापों से मुक्त करने का तात्पर्य हम ऊपर दिखा चुके हैं। स्वामी जी के लेख में व वैदिक सिद्धान्तों में कोई विरोध नहीं है। प्रार्थना उपासना वस्तुति के फल प्रथक २ होते हैं।

प्रार्थना से निरभिमानता-उपासना से उपास्य के गुणों को ग्रहण करना तथा स्तुति से उपास्य के प्रति प्रीति वा आकर्षण पैदा होना ये तीन लाभ होते हैं। विपक्षी तो दर्शन का अध्यापक बनता है। क्या इतनी सी बात भी समझने की योग्यता नहीं रखता है। दयानन्द को गालियां देना कोई दर्शन विषय की योग्यता का प्रभाव नहीं है बल्कि इसके गुण्डापन का सबूत है पाप क्षमा करने की घोषणा करने वाली पुस्तक व खुदा निश्चय रूप से लोगों में पाप करने के प्रति घृणा नहीं वरन उसका प्रोत्साहन देने से पाप वर्धक होंगे यह ठीक है। पाप नाश करने का अर्थ पाप करने की प्रवृत्ति वासनाओं के निवारण की प्रार्थना करना है अगर कोई नुक्ते हराम हिन्दू शास्त्रों की बात को न समझे तो हमारा क्या दोष है।

अपने को विपक्षी पौराणिक हिन्दू कहता है। हिन्दू धर्म में पाप नाश की बात नहीं मानी गई है। कर्म फल अवश्य कर्ता को भोगना पड़ता है। चन्द्र प्रमाण देखें—

पाप क्षमा नहीं होते हैं

बालो युवा च वृद्धश्च यः करोति। शुभाशुभम्।
तस्यां तस्यायवस्थायां भुङक्ते जन्मनि जन्मनि॥
गरुड़ पु० ११३।२६

अर्थ—बालक, युवा वा वृद्ध जो भी शुभ अशुभ कर्म करते उनको उसी अवस्था में उसका फल जन्म जन्मान्तरों में भोगना पड़ता है।

तस्मात् कृतस्य पापस्य प्रायश्चितं समाचरेत्।
न भुक्तस्यान्यथा नाशः कल्प कोटि शतैरपि॥

भविष्य पु० ब्राह्म पर्व १६१।२७

अर्थ—इसलिए कृत पापों का प्रायश्चित करना चाहिए। बिना भोगे हुए पापों का अन्य किसी भी प्रकार करोड़ों कल्प में भी नाश नहीं हो सकता है।

अवश्यं हि कृतं कर्म भोक्तव्यमविचारतः।

शिव पु० उमा सं० ११।२॥

अर्थ—शुभ वा अशुभ कर्म का फल अवश्य ही भोगा जाता है।

कर्म कर्ता नरोऽभोक्ता नास्ति दिवि वा भुवि।
न शाक्यं कर्म चा भोक्तुं स देवासुर मानुषैः।
कर्मणा ग्रथितां लोक आदि प्रभृति वर्तत॥

महा अनु वा अ १४५॥

अर्थ—कर्म करने वाला मनुष्य कर्मों का फल न भोगे, ऐसा न कोई पुरुष इस पृथ्वी पर है और न स्वर्ग में है। देवता असुर और मनुष्य कोई भी अपने कर्मों का फल भोगे बिना नहीं रह सकता है। आदिकाल से संसार कर्म से गुथा हुआ है।

अवि प्रणाशः सर्वेशां कर्मणा मिति निश्चयः।
कर्म जानि शरीराणि तथैवा कृतयो नपः॥४॥
यावन्नक्षीयते कर्म तावत् तस्य स्वरूपता।
क्षीण कर्मा नरोलोके स्वरूपान्यत्वं नियच्छति॥८॥

महा आश्रम वासिक अ ३४॥

राजन् ! यह सिद्धान्त है कि समस्त कर्मों का फल भोग किए बिना उनका नाश नहीं होता। जीवात्मा को जो शरीर और नाना प्रकार की आकृतियां प्राप्त होती हैं वे सब कर्म जनित ही हैं। जब तक शरीर के प्रारब्ध कर्मों का क्षय नहीं होता तब तक उस जीव की इस शरीर में एकरूपता रहती है। जब कर्मों का क्षय हो जाता है तब वह दूसरे शरीर को प्राप्त होता है।

निरन्तरं च मिश्रं च लभते कर्म पार्थिव।
कल्याणं यदि वा पापं न तु नाशोऽस्य विद्यते ।।१२।।
महा शान्ति अ २६० ।।

मनुष्य कर्मों के फल रूप से कभी सुख कभी दुःख कभी दोनों एक साथ भोगता है। पुण्य या पाप कोई भी क्यों न हो फल भोगे बिना उसका नाश नहीं होता है।

येन येन शरीरेण यत् यत् कर्म करोतिमः।
तेन तेन शरीरेण तत् तत् फल मुपाश्नुते ।।३।।
यस्यां यस्यामवस्थायां भुङ्क्ते जन्मनि जन्मनि ।।४।।
महा० अनु० पर्व अ० ७।।

मनुष्य जिस २ (स्थूल सूक्ष्म) शरीर से जो २ कर्म करता है, उसी २ शरीर से उस उस कर्म का फल भोगता है।३। जिस २ अवस्था में वह जो जो शुभ अशुभ कर्म करता है, प्रत्येक जन्म को उसी उसी अवस्था में वह उसका फल भोगता है।४।

इस प्रकार सम्पूर्ण पौराणिक तथा अन्य धार्मिक साहित्य से सैकड़ों प्रमाण हम दे सकते हैं जिनसे स्पष्ट है कि कृत कर्मों का फल कर्ता को भोगना पड़ता है, कृत कर्म क्षमा नहीं किए जाते हैं।

कुरान की बुद्धि विरुद्ध गलत मान्यताओं पर विश्वास करने वाला मुसलमानों का झूठा वकील नुरफेहराम विपक्षी हिन्दू पौराणिक मत का घोर शत्रु है जिसे अपने धर्म का भी ज्ञान नहीं है। स्वामी दयानन्द जी ने कुरान के पाप माफ करने के गलत सिद्धान्त का खण्डन करके ठीक ही किया है। महामूर्ख विपक्षी उसे काट नहीं सका है। मुसलमान तो पुनर्जन्म को भी नहीं मानते हैं तब क्या यह उसे भी मानकर आवागमन के सिद्धान्त का विरोधी है? वह तो रोजा भी रखता है खतना भी अपना शायद करा लिया है। ऐसे महाशूद्र का हिन्दुत्व से बहिष्कार होना चाहिए।

झूठी कसमें

कुरान में मुसलमानों को झूठी कसमें खाने का भी निर्देश है ताकि वे कसमें खाकर उससे मुकर कर लोगों को धोखा दे सके। उनका खुदा कसम खाकर मुकर जाने पर उनको माफ कर देता है। प्रमाण देखें—

"तुम लोगों के लिए खुदा ने तुम्हारी कसमों को तोड़ डालने का हुक्म दे रखा है और अल्लाह ही तुम्हारा मददगार और हिकमत वाला है।" कु पा २८ सू॰ तहरीम आ २॥

किसी से प्रतिज्ञा करके उससे हट जाना, कसम खाकर मुकर जाना यह हददर्जे की नीचता व बेईमानी और बेशरमी है यदि स्वामी जी ने इस खुदाई हुक्म पर अमल करने वाले मुसलमानों को बेशर्म लिख दिया तो गलत क्या हुआ, विपक्षी के पेट में दर्द क्यों होता है?

शान्ति भंग

विपक्षी लिखता है कि दयानन्द ने मुसलमानों के कुरान को

शान्ति भंग कराने वाला गलत लिखा है। हमारा कहना है कि उसने फूटी आंखों से कुरान को नहीं देखा है। भारत में हजारों हिन्दू मुस्लिम बलवे मुसलमानों की ओर से होते रहे हैं। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार ९०% बलवे मुसलमानों की ओर से प्रारम्भ किए जाते रहे हैं। भारत में हिन्दू मन्दिरों की लूट तथा नारी अपहरण की सत्य घटनायें स्वामी दयानन्द के आक्षेप को सही प्रमाणिक करने को काफी पुष्टे प्रमाण हैं। कुरान के प्रमाण भी विपक्षी देख लेवें, खुदा ने कहा—

"और इसी तरह हर बस्ती में हमने बड़े २ अपराधी पैदा किए ताकि वहां फिसाद पैदा करते रहें।"

कु० पा० ८ सू० अनआम रु० १५ आ १२३॥

'ताकि फिसाद करते रहें" इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए खुदा फिसादी गुण्डे हर जगह पैदा करता है। तब मुसलमान बलवाई लुटेरे और फिसादी हुए या नहीं।

'मुसलमानों को चाहिए कि मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त न बनावें और जो वैसा करेगा तो उससे और अल्लाह से कोई सरोकार नहीं।"

कु० पा० ३ सू० आलइमरान आ २८॥

"ईमान वालो (मुसलमानो) ईमान वालों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त मत बनाओ! क्या तुम जाहिर खुदा का अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो।"

कु० पा० ५ सू० निसा रु० ११ आ १४४॥

इससे स्पष्ट है कि मुसलमान और उनका कुरान झगड़े कराने वाला, वैमनष्य फैलाने वाला, पूजा में अशान्ति फैलाने वाला है। स्वामी जी का आरोप सत्य है। विपक्षी जैसे सैकड़ों मूर्ख मिलकर भी उसे काटनहीं सकते हैं।

कुरान का सृष्टि क्रम गपोड़ा है।

स्वामी जी ने इच्छा मात्र से खुदा के दुनियां बनाने की कुरान की बात का खण्डन किया है तो इस मुखराज ने स्वामी जी को गालियां देना प्रारम्भ कर दिया है जबकि स्वयं कुरान ने खुदा द्वारा कुन 'हो' कहकर किसी भी चीज के बनाने का निषेध किया है। देखो प्रमाण—

'हो' से सब कुछ बनता है

"जब वह (खुदा) किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसे फर्मा देता है कि 'हो' और वह हो जाता है।"

कु० पा० ३ सू० आलइमरान आ० ४७॥

यह दावा खुदा का वस्तुतः गलत था और इसीलिए स्वामी जी ने उसकी मजाक बनाई है। कुरान कहता है कि दुनियां बनाने में अरबी खुदा को बहुत कड़ी मेहनत करनी पड़ी थी। उसे अपने दोनों हाथों का जोर लगाना पड़ा था और छः या आठ दिन में सभी कुछ बना पाया था।

खुदा के दो हाथ हैं

"खुदा के दोनों हाथ फैले हुए हैं जिस तरह चाहता है खर्च करता है।"

कु० सू० मायदा रु० ६ आ ६४ ॥

"तुम्हारा परवरदिगार वही अल्लाह है जिसने ६ दिन में जमीन आसमान को बनाया फिर तख्त पर जा बैठा।"

कु० पा० ११ सू० यूनिस आ० ३॥

दुनियां ६ दिन में बनी

"और हमने आसमानों को अपने हाथों की ताकत से बनाया

और हम सामर्थ वाले हैं ''

कु० पा० २७ सू० जारियात आ० ४७॥

"और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके बीच में है ६ दिन में बनाया और हम नहीं थके।"

कु० सू० काफ आ० ३७॥

दुनियाँ ८ दिन में बनी

कुरान सूरत हामीम सज्दह में आ० ९-१० व ११ में खुदा ने सभी कुछ बनाने में ८ दिन लगने की बात कही है।

इस प्रकार खुदा 'हो' कहकर या इच्छा मन में करते ही सब कुछ बना लेता है बिल्कुल गलत हो जाता है। स्वामी जी का ऐतराज कुरान से समर्थित है, विपक्षी मूर्ख है जो बिना कुरान पढ़े ही कुरान का समर्थन करने बैठ गया है कुरानी सृष्टि प्रक्रिया सर्वथा गलत एवं अवैज्ञानिक है। सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ का निर्माण क्रम पूर्वक विकास से होता है, इच्छामात्र से जादू की तरह नहीं होता है जो सृष्टि में प्रत्यक्ष है। विपक्षी भी एक दिन में मां के पेट में नहीं बन गया था।

किबले की पूजा

आगे चलकर विपक्षी किबले की पूजा का समर्थन करता है कि वह उनका उपसना स्थल है, मुसलमान उसे खुदा नहीं समझते हैं। यह भी उसका अनर्गल प्रलाप है। मुसलमान किबले को अरबी खुदा का घर मानकर उसकी पूजा परिक्रमा करते हैं जैसे तुम बुद्धू पत्थरों को ईश्वर मानकर पूजते हो। तुम दोनों बुत परस्त हो। तौरात में भी खुदा का मकान होने का जिक्र आता है उसी की नकल में हर मस्जिद खुदा का घर इस्लाम में माना जाता है, इसीलिए कुरान में नमाज के

वक्त काबे की ओर को दिशा में मुँह करके नमाज पढ़ने का आदेश है। स्वामी जी की कुरान समीक्षा सही है। काबे की ओर मुँह करने में कोई वैज्ञानिक बात नहीं है। बल्कि एक बड़ी बुत परस्ती का सबूत है। यही बात स्वामी जी ने भी लिखी है।

विपक्षी बाजार से कुरान खरीद कर उसमें पारा २२ में सूरते अहजाब को पढ़ लेवें। उसमें खुदा मियाँ पैगम्बर साहब के घरेलू मैनेजर की तरह उनकी बीबियों को धमकाते हैं। तथा नई औरत व लोंडिया सप्लाई करते दिखाए गए हैं। तब स्वामी जी के सत्य बात लिखने पर आक्षेप क्यों किया गया है। विपक्षी महा धूर्त है कि उसने बिना कुरान पढ़े और बिना वास्तविकता को समझे केवल द्वेश वश गालियों की बौछार की है। वह तो पैगम्बर का अर्थ भी नहीं जानता है। पैगाम दूर से किसी के पास लाने वाला पैगम्बर होता है! क्या वह खुदा मियाँ को किसी दूसरे लोक में बैठा स्वीकार करता है, उसे सर्व व्यापक मानने वाला किसी को खुदाई पैगम्बर नहीं मान सकता है। इस्लाम के तो सभी सिद्धान्त गलत हैं। विपक्षी चाहे तो शास्त्रार्थ कराकर देख लें, हम सर्वथा तैयार हैं। हमने १६ किताबें कुरान के खण्डन पर लिखी हैं। ताकत हो तो उनका जबाब दिलावे।

शिवप्रसाद, माधवाचार्य, ईसाई थी वो क्या तुम्हारे पड़-बाबा लगते थे जो उनकी गलत बातों को भी सत्य मानते व उनकी प्रशसक हो। स्वामी दयानन्द जी की एक भी बात का तुम बिचारे किस गिनती में हो कोई भी मौलवी बौद्ध पादरी खन्डन नहीं कर सका है और न कर सकता है। सभी उनकी योग्यता व चरित्र का आदर सदैव करते रहे है। मेरठ के एक

बृद्ध सज्जन ने हमको बताया था कि रमाबाई बेश्या नो इस धूर्त राजेन्द्र गर्ग के पड़बाबा की सगी बहिन थी। जरा अपनी वंश परम्परा की इज्जत का ख्याल रखा करो वरना लोग तुमको भी वेश्या वंश का होना मान लेंगे। बात जब तक छिपी रहे तुम्हारे हित में अच्छी है। तुमने जैसी गन्दी भाषा व गालियों का स्वामी जी के लिए प्रयोग किया है कोई नीच से नीच व्यक्ति भी नहीं कर सकता है। तुम्हारी गालियाँ बताती हैं कि तुम अत्यन्त नीच माता पिता की सन्तान हो, अत्यन्त दुश्चरित्र व गुन्डे हो। कभी कुलीन खान्दान व कुलीन माता पिता की कोई भी कुलीन सन्तान गन्दी भाषा बोलने का साहस ही नहीं कर सकती है। उसके संस्कार उसको नैतिकता धार्मिकता सत्सग उसे सुशील संयमी शालीन व्यक्ति बनाती है, वह नीच बन ही नहीं सकता है। नीच वही बनता है जो नुत्फेहराम हो और तुम अपने को वही साबित कर रहे हो इस्लाम पर कुछ जानना है तो विपक्षी हमारी कुरान पर लिखी पुस्तकें पढ़ सकता है, उसका अज्ञान मिट जाएगा।

'सच्चा सत्यार्थ प्रकाश' लेख का उत्तर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज का जन्म पौराणिक शैव कुल में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा भी उसी पद्धति पर हुई थी। शिवलिंग पूजा से विरक्ति होने पर सच्चे ईश्वर की खोज व प्राप्ति के साधनों के ज्ञान के लिए वे घर से निकल गए थे सारे भारत में मैदानों नदी पर्वतों में वे योगियों की खोज में भ्रमण करते रहे और जो जो सत्य उनको जहाँ से प्राप्त हुए उन्हें ग्रहण करते २ वे मथुरा गुरु विरजानन्द जी के पास शिक्षार्थ आ गए थे। यहां उनको पूर्ण वैदिक सत्यों की

जानकारी मिली। मतमतान्तरों के पाखन्डों को भली प्रकार समझकर वे वैदिक के पुनरुत्थानार्थ प्रचार क्षेत्र में उतरे थे।

इस प्रकार दीर्घकाल तक अन्वेषण करते हुए ज्ञान उनको मिला था उन्होंने उसे सत्यार्थ प्रकाश के रूप में प्रकाशित किया था। उस समय उनके विरोधियों का सारे देश में बोलबाला था। उनके ग्रन्थ में प्रेस में छापते समय अनेक प्रकार के प्रक्षेप जो अवैदिक थे पौराणिक प्रेस के भूतों ने उसमें मिला दिए थे। पुस्तक छापने पर जब जनता के सामने आई और स्वयं स्वामी जी ने उसे देखा तो मिलावटों का पता लगाने पर प्रथम संस्करण को अमान्य करने का नोटिस निकाल दिया जो यजुर्वेद के मासिक अंकों पर छापा था।

उसके बाद सत्यार्थ प्रकाश का संशोधित एवं परिवर्धित दूसरा संस्करण उन्होंने छपाया था जिसकी एक प्रति हमारे पास मौजूद है। ग्रन्थकार जब अपने ग्रन्थ में संशोधन वा परिवर्तन करता है तो अनेक स्थानों पर तथा अकार आदि में परिवर्तन होती है। वही सत्यार्थ प्रकाश में भी हुआ था। दूसरे संस्करण के छापने में भी प्रेस ने छपाई में १४८ अशुद्धियां छाप दी थीं जिनका अशुद्धि पत्र अन्त में लगा है। सत्यार्थ प्रकाश बड़ा ग्रन्थ है। विपक्षी के अनुसार उसके हिन्दी में ही ६० संस्करण निकल चुके हैं। विभिन्न स्थानों से छपने के कारण जब भी जो भी गलती छप जाती है आगे उसका सुधार कर दिया जाता रहा है। किन्तु इससे ग्रन्थ की मौलिकता एवं महत्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। प्रमाण के तौर पर एक स्थल हम बताते हैं विपक्षी ने अपनी पुस्तक दगा० पु० के पृष्ठ ९ पर कंजर वर्ण पंक्ति ३३ में छापने पर आपत्ति की है। अजमेर के किसी भी संस्करण में कंजर वर्ण न छपकर कंजर जाति छपा है पर दिल्ली के एक प्रकाशन में किसी सनातनी कम्पोजीटर ने कजर वर्ण छाप दिया है जिस पर किसी का ध्यान नहीं गया था। हमने इस त्रुटि की ओर सार्वदेशिक

सभा का ध्यान भी खींचा था। ऐसी ही जब गलती हो जाती है तो प्रकाश में आने पर ठीक कर दी जाती है। इससे वर्तमान सत्यार्थ प्रकाश की मान्यताओं पर कोई आक्षेप नहीं बनता है। आर्य समाज को सत्यार्थ प्रकाश का दूसरा संस्करण व अब तक के बाद के सभी संस्करण मान्य हैं, प्रथम नहीं। संवत् १९३८ में छपी विपक्षी ने किसी जाली पुस्तक को दयानन्द रचित बताकर आक्षेप किया है हमारा कहना है कि नवलकिशोर प्रेस द्वारा प्रकाशित 'सन्ध्योपासनादिपंच महायज्ञ विधि" नाम की पुस्तक पौराणिकों का जाल था, उससे स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का कोई सम्बन्ध नहीं था, न आर्य समाज उसे मानता है। आर्य समाज वर्तमान सत्यार्थ प्रकाश के किसी भी स्थल व सिद्धान्त पर शास्त्रार्थ को सदैव तैयार रहता है।

अपनी पुस्तक के अन्तिम निवेदन में विपक्षी स्वामी करपात्री (हरिहरानन्दजी पं. अखिलानन्द, पं. कालूराम, पं. अम्बिकादत्त व्यास, राजा शिवप्रसाद प्रिन्सिपल ईसाई थीबों और पं. माधवाचार्य जी को स्मरण करता है तथा इनको पौराणिक पन्थ के महान विद्वान समझता है। इनमें स्वामी कारपात्री जी तो कानपुर में लेखबद्ध शास्त्रार्थ ब्राह्मण ग्रन्थ वेद है इस विषय पर आर्य समाज से पराजित हो चुके थे। पं. अखिलानन्द जी दयानन्द दिग्विजय के लेखक थे, पर कुछ गलतियों के कारण आर्य समाज से निकाल दिए गए थे, शिवप्रसाद जी कोई संस्कृत के विद्वान नहीं थे, थीबों ईसाई था और ईसाई मत के खण्डन पर स्वामी दयानन्द जी का विरोधी था और बनारस के पौराणिक पंडित मण्डली उस ईसाई के चरण धोकर पिया करती थी। पं. माधवाचार्य जी से हमारा लेखबद्ध संघर्ष रहा था और वे हमारी पौराणिक मत के खण्डन पर एक भी पुस्तक

का उत्तर नहीं दे सके थे न हमारे ६३ प्रश्नों में से जो छप चुके थे एक का भी उत्तर दे सके थे। हम उनका पाण्डित्य खूब जानते थे। जिस जाति में विद्वान् मर जाते हैं वहाँ उल्लूओं की पूजा होती है जैसे कि पौराणिकों में विपक्षी जैसा षठ-गँवार लाला भी 'गर्ग' के नाम से इज्जत पा रहा है।

विपक्षी की इस सारी पुस्तक में कोई पाण्डित्य की बात नहीं है। न किसी वैदिक सिद्धांत पर आक्रमण किया गया है। केवल धूर्ततापूर्ण गालियां चिढ़कर विपक्षी ने दी हैं। आशा है हमारे इस उत्तर से उसका मद मर्दन हो जावेगा। हम सभी पाठकों से सत्यार्थ प्रकाश के पूरे स्थल पढ़ने का अनुरोध करेंगे जहां से विपक्षी ने आक्षेप के लिए स्थल लिए हैं सच्चाई स्वयं प्रकट हो जावेगी।

अन्त में हम एक बात और लिखना आवश्यक समझते हैं वह यह है कि आर्य समाज की मान्यताओं पर व वैदिक साहित्य पर जो आर्य समाज को मान्य है। यदि कोई विद्वान आक्रमण करेगा तो उसका उत्तर दिया जावेगा। 'गर्ग' जैसे कुपढ़ व्यक्ति की पुस्तकों पर जिनमें कोई सिद्धांत या पाण्डित्य की बात नहीं होगी आगे कोई उत्तर या ध्यान नहीं दिया जावेगा।

ऊर्ध्वपुण्ड से स्वर्ग का प्रमाण

ऊर्ध्वपुण्ड्रधरो विप्रः सर्वलोकेषु पूजितम्।
विमान वर मारुह्य याति विष्णों परं पदम्॥
(पद्म पु० उत्तर ख० अ० २२५ कलकत्ता)

ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करने वाला ब्राह्मण सीधा विमान में बैठकर विष्णुलोक को जाता है।

नाभा जी को डोम 'धर्म दिवाकर' पुस्तक पूजा संस्करण में पृष्ठ ४ पर लिखा है। वह विपक्षी की तरह पाप योनि वैश्या पुत्र नहीं थे।

पापयोनि महामूढ़ धूर्त विपक्षी यह समझता है कि भागवत पुराण व्यास जी ने बनाया था जबकि पुराण के अनुसार भागवत बनाने वाला दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य जी थे। स्वामी दयानन्द जी ने दैत्य गुरु की रचना भागवत बनाने वाले के बारे में लिखा है कि यदि भागवत बनाने वाला गर्भ में ही मर गया होता तो श्रीकृष्ण जी जैसे श्रेष्ठ महापुरुष को गोपियों से राधा से, कुब्जा से, व्यभिचार के लाञ्छन नहीं लगाए जा सकते थे। स्वामी जी ने इसमें क्या गलत लिखा है, जो इस मेरठ के कुत्ते ने उन पर गालियों की बौछार की है। इस नालायक ने कभी कुछ पढ़ा लिखा तो है नहीं वैसे ही रिश्वत देकर मास्टर बन गया है। देखो भविष्य पुराण प्रतिसर्ग खण्ड ३ अ० २८ में १८ पुराण बनाने वाले अनेक लोगों की सूची दी है जो हमने 'पुराण किसने बनाए ?' पुस्तक में दी है। वहाँ लिखा है—

"शुक्र प्रोक्त भागवतं।"

अर्थात्—दैत्यगुरु शुक्राचार्य जी ने भागवत कहा था। यह वही शुक्राचार्य हैं जिन्हें महादेव जी ने एक बार साबुत ही निगल लिया था और वे हजार साल तक उनके पेट में से निकलने का रास्ता न मिलने पर उसी में घूमते रहे थे। फिर जब एक बार कामातुर होने पर शिवजी का वीर्य टपक पड़ा था तो शुक्राचार्य जी उसी शुक्र के साथ बाहर निकल आए थे। शुक्र के साथ चिपक कर बाहर निकलने से उनका नाम शुक्राचार्य पड़ा था जिन्होंने भांड़वत पुराण बनाया था। यह है सड़ातनी ऋषियों की पैदायश की मजाक यह नालायक ऋषि दया-

नन्द जी को गाली न देगा तो और कौन देगा। क्योंकि सारे ही महापुरुषों को सड़ातन धर्म में गालियां देकर बदनाम करने की परम्परा है। वशिष्ठ ऋषि को भी पुराणों में विपक्षी के जन्म की तरह बताकर गालियाँ दी गई हैं।

गणिका गर्भ सम्भूतो वशिष्ठश्यो महामुनि।

(भवि० पु०)

वशिष्ठ जी रण्डी से पैदा हुए तो विपक्षी गर्ग भी पाप योनि किसी वैश्या के गर्भ में जन्मा है और तभी भड़ुओं की तरह गालियाँ देना सीखा है। लगता है अब यह अपने कुकर्मों के कारण तीन साल के लिए जेल की हवा खाने जावेगा।

नोट—गाली पुराण पुस्तक की एक महत्वपूर्ण बात का उत्तर देने से रह गया जो यहां दिया जाता है।

द० गा० पु० में पृष्ठ १४ पर विपक्षी ने सत्यार्थ प्रकाश के उद्धरण को पेश किया है जिसमें कहा है कि मातृ योनि "परित्यज्य विहरेव सर्व योनिष"

अर्थात्—मां को छोड़कर शेष सभी औरतों के साथ व्यभिचार जायज है चाहे वे बहिन बेटी या किसी भी जाति की स्त्री हो।

विपक्षी अर्थ में धूर्तता करता हुआ कहता है कि इसमें माता की योनि का अर्थ माता के वंश से है। यह वश और योनि का अर्थ नहीं जानता है। यदि वंश अर्थ होता तो "मातृ वंश परित्यज्य" शब्द लिखे होते, पर वहाँ 'माता की योनि' से तात्पर्य स्पष्ट है।

आगे लिखता है इसी प्रकार भग और लिंग के पूजन का अर्थ शिव पार्वती के पूजन का है। सड़ातन धर्म का महान कल्कि अवतार दिल्ली के दीनानाथ सारस्वत् ने सनातन धर्मी लोक ६ में लिखा है कि सनातन धर्म में माता पिता की सच्ची

पूजा उनकी भग और लिंग की पूजा से ही होती है। हमारा विपक्षी सच्चा सनातनी होने से रोजाना अपनी माता की योनि और पिता के लिंग की पूजा उनको उघार कर रोली चावल फूल व गंगाजल उन पर बरसा कर तथा सामने साष्टांग प्रणाम लेट कर किया करता है तथा बोलता है—

नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं हे योनि लिंग परमेश्वरौ। तुम्ने हमको जन्म दिया है खूब स्वस्थ बने रहो। "बोलो सच्चे सनातन धर्म की जं गर्ग कुत्ते की जै"

अन्त्यज जाति—पुस्तक के पृष्ठ २४ पर वह अन्त्यज जाति का पता पूछता है। वैश्यापुत्र होने से उसमें बेद को समझने की अक्ल कैसे आ सकती है। यजुर्वेद के अ० २६ के मन्त्र २ में—"यथेमां वाच कल्याणी" में (अरणाय) पद अन्त्यज जाति का निर्देश करता है। यह धूर्त तो अपनी मूर्खता को देखता नहीं है। दयानन्द जी को गालियां देना सीखा है। आखिर सज्जनता तो कुलीनों में होती है न कि नीचों में।

यह पुराणों को व्यास कृत बताता है जबकि पुराण में ही लिखा है कि—

धूर्तैः पुराण चतुरैः हरिशंकराणाम्।
सेवा पराश्च विहिता स्तव निर्मिता नाम्॥
देवी भागवत ५।१६।१२।

अर्थात्—सारे पुराण अनेक धूर्त लोगों ने बनाए हैं। यह नालायक धूर्तों के ग्रन्थ को प्रमाणिक मानकर वेद व्यास जी को बदनाम करता है। जो गीता वैश्य जाति को पाप योनि बताकर जूते लगाती है, वैश्या से उत्पन्न यह बदमाश उसकी विकालत करता है। मेरठ के लोगों को इसकी असलियत का पर्दाफाश करना चाहिए कि यह इतना गुण्डा जन्म से है या रण्डियों की सौहबत से बना है?

अध्याय २

"परिशिष्ट"

'गर्ग' ने अपनी किताब में लिखा है कि आर्य समाज श्राद्ध का विरोधी है। हमारा कहना है कि श्राद्ध सड़ातन धर्म में गौ के मांसाहार से होता है अतः वह मान्य नहीं हो सकता है। देखो प्रमाण—

अथ श्राद्ध वर्णनम्

क्षालनं दर्भ कूर्चेन सर्वत्र सोतसां पशोः।
तूर्णी मिच्छ क्रमेण स्याद्रपार्थे पार्णदारुणी ॥१॥
सप्त तावन्मर्द्धन्यानि तथा स्तन च तुष्ठ्यम्।
नाभिः श्रोणिस्यानञ्च गोस्रोतांसि चतुर्दशम् ॥२॥
क्षरोमांसावदानार्थः कृत्स्ना स्विष्ट कृदावृता।
वपामादाय जुहुयात्तत्र मन्त्र समापयेत ।३॥
हृज्जिह्वा क्रोडमस्थीनि यकृद्वृक्कौ गुदं स्तना :
श्रोणि स्कन्ध सदा पार्श्व पश्वंगा नि प्रचक्षते ॥४॥
एकादशानांमंगानांम वदानानि संङख्यया।
पार्श्वस्य वृक्क सक्थनोश्च द्वित्वादाहुश्चतुर्दशः ॥५॥
चरितार्था श्रुतिः कार्या यस्मादप्यनुकल्पतः।
अतोह्यार्षेन होमः स्याच्छागपछे चरावपि ॥६॥

अवदानानि यावन्ति क्रियेटन् प्रस्तरे पशोः ।
तावतः पायसान् पिण्डान् पश्वभावेऽपि कारयेत ॥७॥
(कात्यायन स्मृति २९ वां खण्ड)

कात्यायन स्मृति के उपरोक्त प्रमाणानुसार गाय को काट कर उसके १४ टुकड़े, करके चरबी को एकत्रित करके और फिर उस सबसे होम करके श्राद्ध करने की सनातन धर्म की व्यवस्था है। इसी प्रकार विष्णु पुराण अंश तीन अध्याय १६ में श्लोक १ से ४ तक में पशुओं को मारकर श्राद्ध में उनके गोश्त से श्राद्ध करने का विधान दिया है। कोई पुनर्जन्म मानने वाला श्राद्ध की बात करे तो वह महा मूर्ख होगा।

विपक्षी गर्ग तो पक्का सनातन धर्मी होने से सदा ही गौ मांस खाता व श्राद्धों में अपने घर वालों को खिलाया करता है। क्योंकि वह माँसाहारी धूर्त है अतः उसकी प्रकृति में क्रोध हिंसा व दूसरों को गालियाँ देने का सनातनी अवगुण पैदा हो चुका है जैसा कि माँसाहारी मुसलमानों में देखा जाता है। शराबी कबाबी लोगों में धैर्य शान्ति, सज्जनता, शालीनता आदि विद्वानोचित सद्गुण हो ही नहीं सकते हैं।

यह बात हम निराधार नहीं कहते हैं किन्तु विपक्षी गुण्डा 'गर्ग' ने स्वयम् यह स्वीकार किया है। अपनी गन्दी किताब 'गीता स्वरूप निर्णय' में पृ० २०१ पर पंक्ति २५ व २६ में उसने अपनी असलियत खोलते हुए लिखा है—

हम जैसे कुटिल खल (धूर्त-बदमाश-गुण्डे) कामी की जीवनधारा गीता के इन श्लोकों (गीता अ० ९ श्लोक ३० व ३१) ने ही बदली है। ..... (घोर) दुराचारी होते हुए भी सदाचारी बनने की प्रेरणा इन्हीं श्लोकों से हमें मिली है। देश व्यापी

संगठन (आर्य समाज) से अकेले ही भिड़ जाने की हिमाक़त हमें इन्हीं श्लोकों से प्राप्त हुई है।

कोई धूर्त जब अपनी असलियत स्वय खोल बैठे तो किसी को शक करने का अवकाश नहीं रहता है। गीताकार ने अपना सम्प्रदाय बढ़ाने के लिए मूर्खों को झाँसा दिया था कि कोई भी बदमाश नम्बरी दुराचारी यदि सब पापों से बचना चाहे तो मेरी शरण में आ जावे में उसे सब दोषों से मुक्त करके स्वर्ग में पहुंचा देता हूं। तो इस पाप माफी के भ्रम से सकड़ों नहीं हजारों ना समझ गीता पन्थ में जा घुसे थे। पर वे यह नहीं जानते थे कि वैदिक धर्म में कृत कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। गुनाह बिना भोगे माफ नहीं होते हैं (विशेष प्रमाण इस्लाम बाल अध्याय में पीछे मिलेंगे) पाप माफ होने की कल्पना मूर्खों का मनो विनोद है। ईश्वर से पाप नाश करने की प्रार्थना से व्यक्ति की उस ओर की प्रवृत्ति दब जाती है। पश्चाताप करने से वह पुनः दुष्कर्म की ओर नहीं जाता है। केवल इतना ही लाभ होता है। पर यह मेरठ का कुत्ता तो अपनी पुरानी आदतों को अभी भी दयानन्द को गालियां देकर प्रदर्शित कर रहा है तब उसका गीता पढ़ने से क्या सुधार हुआ है, वस्तुतः बिगाड़ ही हुआ है। जब पाप माफ की गारण्टी गीता ने दे दी तो फिर पाप करने मे डरने की क्या जरूरत है। "सैंया भए कोतवाल तुझे डर काहे को।" इसीलिए हम कहते हैं कि गीता कल्पित उपाख्यान महाभारत में कृष्ण को परमात्मा बताकर वैष्णव पन्थियों ने जोड़कर सम्प्रदाय चलाया था और गर्ग जैसे लाखों को मूर्ख बनाया है।

'गीता स्वरूप निर्णय' पुस्तक के मुख पृष्ठ पर एक डान्सर का इपने चित्र दिया है जो न तो विद्वान का है, न शूरवीर का

है, न राजा का है, न योगी का है बल्कि किसी रँग रँगीले नौ-जवान का रँग बिरँगे कपड़ों के शौकीन कमर पर हाथ रखे, बाजूबन्द पहिने, पैरों में सैन्डिल दाबे किसी सिनेमा एक्टर का सा लगता है। अगर इस स्वरूप वाला कोई आदमी शहर में आ जावे तो तमाम भीड़ लग जावे, बच्चों का भारी मनोरंजन होगा। यदि वह ऐक्टर कहीं नाचना भी जानता हो तब बिना पैसे के सिनेमा का मजा मिलेगा।

इस रँग रँगीले मित्र के पैरों में घुँघरू भी पहिना देना चाहिए था, उसका कमर पर तो हाथ रखा ही है, तब सच्चे अर्थों में वह मनोरंजक डान्सर बन जाता। आगे इस भूल का सुधार कर लेवें। शायद यह चित्र राजेन्द्र कुमार गर्ग का है। क्योंकि नीचे उसीका नाम लिखा है।

यह मूर्ख अपने को सनातन धर्मी कहता है। हम इसे सच्चे सनातन धर्म का स्वरूपी पुराणों से प्रसंग वश यहां बता देना ठीक समझते हैं।

महाभारत आदि पर्व में एक कथा आती है जिसमें लिखा है कि-एक बार उद्धालक ऋषि अपने पुत्र श्वेतकेतु व पत्नी के साथ बैठे थे, कि एक अजनबी ने जो कामातुर था आकर श्वेत-केतु की माँ को पकड़ लिया और जबरदस्ती व्यभिचार कराने के लिए चलने को कहा। इस पर पुत्र श्वेतकेतु को क्रोध आ गया। उस समय पिता उद्धालक ने अपने बेटे श्वेतकेतु को बड़े प्यार से शान्त करते हुए कहा—

"मा तात कोपं कार्षीस्त्वएष धर्मं सनातनः।"

हे बेटा क्रोध मत करो यही तो सच्चा सनातन धर्म है।

महाभारत अनुशासन पर्वान्तर्गत दान पर्व अ० २ में भी

एक कथा आती है जिसमें सुदर्शन ने अपनी पत्नी को सनातन धर्म के अनुसार अतिथि पुरुष के साथ विषय भोग कराके उसे हर तरह से प्रसन्न करने का आदेश दिया है। पक्का सनातनी होने से गर्ग ने भी वही व्यवस्था अपने परिवार में कर रखी है।

नालायक गर्ग ! तेरा वैष्णव धर्म भी नीच कुलोत्पन्न एक महानीच शठ धूर्त ने द्विजों के वैदिक धर्म से तथा दक्षिण में शूद्रों के साथ होने वाले घोर अत्याचारों से कुपित होकर चलाया था इसीलिए उसका नाम भी शठ+कोप=शठकोप रखा गया था। नीचों अशिक्षितों द्वारा चलाया गया वैष्णव सम्प्रदाय शराब, मांस व व्यभिचार प्रधान होना ही चाहिए। इसी आधार पर श्राद्धों में शराब-मांस, यज्ञों में पशु बलि, शिवजी को भगड़ी वेश्यागामी, अन्धक दैत्य के पुत्र आदि से सम्भोग विष्णु को 'तथापि परनारीणां लम्पटो नित्यमेवहि' कह-कर घोर व्यभिचारी बताना, बल्लभ सम्प्रदाय वालों का खुला व्यभिचार आदि सभी गन्दी बातों का समावेश तेरे सनातन धर्म में है, तू इनका समर्थन केवल इसीलिए करता है कि तू भी धूर्त व नीच कुलोत्पन्न नुत्फेहराम है, वरना तुझे आर्य समाज व ऋषि दयानन्द का कृतज्ञ होना चाहिए था।

तुझे यह भी नहीं मालूम है कि सनातन धर्म केवल लगभग ८० साल ही पुराना है, औरआर्य समाज के बाद पैदा हुआ है। आर्य समाज के मुकाबिले पर पौराणिकों ने पहिले भारत धर्म महा मण्डल बनाया था। बाद में उसे समाप्त करके सन् १९१० के लगभग 'सनातन धर्म' नाम से एक नई संस्था तथा धर्म को जन्म दिया गया था। यह सनातन धर्म तो अभी कल का बच्चा है। कुछ समझ में आया या नहीं।

हम लोग पौराणिक स्वर्ग का खन्डन इसलिए करते हैं कि वहाँ तो घोर व्यभिचार के अड्डे हैं। केदार कल्प पुराण अध्याय १३ में लिखा है—

मया समुपभोगार्थं सम्प्राप्तः काम उत्तमः।
मृत्युलोके न मे कार्यं एतत्सर्वं वदाम्यहम् ॥३०॥

मैंने सम्भोग के लिए स्वर्ग की कामना की थी। मृत्युलोक से मेरा कोई काम नहीं हैं मैं यह सच सच कहता हूं।

दिव्य विमान मारुह्य दिव्य स्त्री भोग भूषितम्।
स्वर्गं गच्छध्वममलं सर्व काम समन्वितम् ॥

शिव पु० उमा सं० अ० ७-४६॥

दिव्य विमान पर चढ़कर दिव्य स्त्रियों के भोग से भूषिता सब कामना के देने वाले निर्मल स्वर्ग को जाओ।

हम लोग तुम्हारे व्यभिचारालय स्वर्ग से इसीलिए घृणा करते हैं क्योंकि सारे सनातन धर्म का आधार ही व्यभिचार और गुण्डागर्दी है। शिव पुराण ने सभी देवताओं को व्यभिचारी घोषित कर रखा है प्रमाण हम पहिले दे ही चुके हैं, वहाँ देख लेवें। विशेष जानने के लिए हमारी अन्य पुस्तकें 'शिव लिंग पूजा क्यों' पाठक पढ़ सकेंगे। सूची इस पुस्तक के अन्त में छपी है।

एक बार शिवजी के कामदेव ने जोर किया था तो मस्ती में आकर शिवजी का जब वीर्यपात होने लगा तो उन्होंने उसे सभी सनातनी देवताओं को थोड़ा २ परशाद के रूप में पिला दिया था। पुराणकार लिखता है—

योऽपे देवाधिदेवेशः कपर्दी नील लोहितः।
तस्यरेतः सुराः पीत्वा सगर्भा विष्णुना सह ॥

सौर पुराण अ० ५३।३६॥

शिवजी का वीर्य पीकर विष्णु भगवान सहित सारे ही देवताओं को गर्भ रह गया था। पता नहीं उन मर्द देवताओं के बच्चे किधर से पैदा हुए थे। पाठक हँसे नहीं, यही तो गुण्डा गर्ग का सनातन धर्म है जिसमें सारे पौराणिक देवता महाभ्रष्ट हैं क्योंकि इसने अपने को नम्बरी धूर्त व कामी गुण्डा स्वयं ही ही घोषित किया है। वह तान्त्रिक भी है तथा तान्त्रिकों में स्त्रियों का गन्दा रज व पुरुष का वीर्य चाटने की प्रथा है। देखो कुलाराव तन्त्र उल्लास ८ में लिखा है—

मधु कुम्भ सहस्त्रैस्तु माँस भार शतैरपि।
न तुष्यामिवरारोहे भग लिंगामृतं बिना॥

अर्थात्—हजारों घड़े शराब तथा सैकड़ों भार माँस के साथ ही मर्द औरत के वीर्य तथा रज को पिए बिना मैं संतुष्ट नहीं होता हूँ। यह शैव शाक्तों का वाम मार्ग है जिसका यह अनुयायी है।

गीता

भागवत गीता महाभारत के भीष्म पर्व का एक अध्याय है। वर्तमान गीता में ७००. श्लोक मिलते हैं। पौराणिक लोग गीता को कुरुक्षेत्र के मैदान में कृष्ण अर्जुन सम्वाद के रूप में सत्य ग्रन्थ मानते हैं। स्वयं गीता में भी यही लिखा है। पर अनुसन्धान कर्ता कोई विद्वान ऐसा न मानने को विवश है।

स्थिति यह है कि प्रारम्भ में महाभारत के केवल छः हजार श्लोक लिखे गए थे। इस विषय में एक पुष्ट प्रमाण गरुड़ पुराण का निम्न श्लोक है—

दैत्याः सर्वे विप्र कुलेषु भूत्वा,
कलौयुगे भारते षठसहस्त्रयाम्।

निष्कास्य कश्चिन्नव नितितानाम्

निवेषनं तत्र कुर्वन्ति नित्यम् ॥

गरुड़ पुराण बनने के समय तक महाभारत में लोगों ने सहस्रों श्लोक नए बना २ कर जोड़ दिए थे तथा पुराने श्लोकों को निकाल डाला था। पुराणकार ने स्वीकार किया है कि आदि में वह केवल छः हजार श्लोक वाला था, किन्तु कलियुग में राक्षसों ने ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर उसमें भारी काट छांट व प्रक्षेप कर दिए हैं।

महाभारत में पचासों उपाख्यान विद्वानों ने गढ़ २ कर जोड़े हैं। जब भी किसी विद्वान को कोई अच्छी बात कहनी होती थी तो वह एक कहानी गढ़ता था और उसमें दो पात्रों के वार्तालाप या शास्त्रार्थ के माध्यम से अपनी उस बात या उपदेश को कहलवा देता था जो उसे लिखनी होती थी।

कथा नल दयमन्ती चिड़िया व राजा का शास्त्रार्थ, कृष्ण अर्जुन सम्वाद आदि सैकड़ों उपाख्यान ऐसे ही जोड़े गए हैं जिनमें बहुत उत्तम उपदेश मिलते हैं। जब महाभारत का विस्तार प्रारम्भ हुआ था तो कृष्णार्जुन सम्वाद के रूप में गीता के केवल ७० श्लोक बनाकर जोड़े गए थे जिनमें आत्मा की अमरता तथा पुनर्जन्म के वैदिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया था। यह सुन्दर उपदेश गीता के दूसरे अध्याय में पूर्ण हो जाता है।

आज से तीन हजार साल पूर्व एक गुजरात के महाराजा ने इण्डोनेशिया के वाली टापू में मन्दिर बनवाया था। जो आज भी विद्यमान है। उस मन्दिर की दीवारों पर वे ७० श्लोक आज भी उत्कीर्ण हैं। हमने उनके फोटो चित्र स्वर्गीय महता

जैमिनि जी के पास देखे थे जो आर्य समाज के विश्व भ्रमण कारी प्रचारक थे। ये श्लोक वर्तमान गीता में विभिन्न अध्यायों में गुथे हुए है।

यह इस बात का प्रमाण है कि पिछले केवल ७० श्लोक ही बनाए गए थे। यह स्थिति महाभारत युद्ध के बाद २५०० वर्ष तक रही थी उसके बाद भारत में बौद्ध और जैन मतों की स्थापना, उनका प्रचार प्रसार प्रारम्भ हुआ था जिनमें बुद्ध महावीर की मूर्तियों की पूजा उनको ही परमात्मा मानकर उनकी उपासना प्रारम्भ की गई। तब हिन्दुओं के धार्मिक नेताओं को भी यह चिंता हुई कि जनता के सामने अपने यहाँ भी उसका विकल्प उपस्थित किया जावे ताकि जनता उधर जाने से रुके और इसी समय विष्णु व शिव की पूजा प्रारम्भ की गई। बौद्ध व जैनों ने २४ तीर्थंकरों की कल्पना की तो इधर भी २४ अवतारों की कल्पना कर ली गई। बुद्ध के समानान्तर श्रीकृष्ण जी व राम को अवतार घोषित कर दिया गया। उनके मन्दिर व उनमें उनकी मूर्तियां लगाकर पूजा चालू की गई।

इधर महाभारत में उपाख्यानों के जोड़ने का क्रम तेजी से चालू था। तो कृष्णार्जुन सम्वाद को आधार बनाकर उस उपाख्यान का विस्तार किया गया। जब तक महाभारत में श्लोक संख्या एक लाख तक पहुंचो, तब तक इस उपाख्यान (गीता) की भी श्लोक संख्या ७० से बढ़कर ७४५ हो गई थी। यह महाभारत के ही निम्न प्रमाण से स्पष्ट है—

षट विंशमिनि संविंशति श्लोकानां प्राह केशवः।
अर्जुना सप्त पाञ्चाशत सप्तर्षोष्टत संजयः।
धृतराष्ट्र श्लोकमेक गीताया मान मुच्यते॥

(महाभारत भीष्म पर्व अ० ४०)

अर्थात्—गीता का मान यह है कि धृतराष्ट्र ने एक श्लोक अर्जुन ने ५७ श्लोक, संजय ने ६७ श्लोक तथा श्रीकृष्ण ने ६२० श्लोक कुल ७४५ श्लोक कहे गए थे। वर्तमान गीता के ७०० श्लोकों में संजय ने ४१॥ श्लोक, अर्जुन के ८३॥ श्लोक, श्रीकृष्ण जी के ५७४ श्लोक तथा धृतराष्ट्र का २ श्लोक मिलते हैं, कुल योग ७०० होता है। गीता के निकाले गए ४५ श्लोक बताना विपक्षी का काम है। यह सब क्यों किया गया तथा ४५ श्लोक क्यों निकाले गए, यह भी विचारने पर स्पष्ट हो जाता है। विद्वानों ने जब गहराई के साथ कृष्ण अवतार को निर्दोष एवं पूर्ण अवतार के रूप में गीता में देखने का यत्न किया तो उन्होंने जिन ४५ श्लोकों को अपने मार्ग में रुकावट डालते पाया था उनको निकाल दिया गया, साथ ही उन्होंने कथानक को सुन्दर, सुगठित तथा धारावाही रूप देने के लिए कृष्ण के ६२० श्लोकों ने ४६ श्लोक काटकर व अर्जुन के २६॥ श्लोक गढ़कर बढ़ा दिए, संजय के २५॥ श्लोक काट दिए गए। इस प्रकार काट छांट करके गीता का वर्तमान स्वरूप तयार किया गया। इसकी पुस्तक में गीता के इस मुख्य पोलखाते को स्पर्श भी नहीं किया है। उसका नाम भी गलत है। उसमें गीता के स्वरूप की कोई विवेचना नहीं है। केवल मौजूदा ७०० श्लोकी कटी छटी अधूरी गीता पर बकवास की गई है।

प्रारम्भिक ७० श्लोकी गीता में श्रीकृष्ण के मैंने यह किया, मैं यह करता हूं, मैं ही परमात्मा हूं, मेरी शरण में आजा मैं तुझे पार लगा दूँगा, पाप माफ कर दूँगा, मैं भक्तों को मोक्ष देता हूं, मेरी गीता को हर किसी को मत सुनाना (अ० १८) विश्वरूप दर्शनरूपी मैस्मरेज़्म का तमाशा रूपी योग आदि के कोई भी श्लोक नहीं थे। उनको परमात्मा बनाकर तथा उन्हीं

के मुँह से यह सब कुछ कहलवाकर जैन व बौद्ध के महावीर व गौतम बुद्ध को ईश्वर मानने वाले के सामने श्रीकृष्ण जी को पूर्ण भगवान साकार रूप में प्रस्तुत कर दिया गया था।

गीता बनाने के बाद उसके लेखकों ने जो अनेक थे और समय २ पर पैदा होते रहे एक श्लोक महाभारत में और जोड़ कर उसका महत्व समस्त धार्मिक साहित्यों से यहाँ तक कि वेद से भी ऊँचा घोषित कर दिया। उन्होंने लिखा कि—

गीता सुगीता कर्तव्या: किमन्यैः शास्त्र संग्रहे।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुख पद्मादि विनिःसृता ॥१॥
महा० भीष्म पर्व अ० ४०॥

अर्थ—वेदादि अन्य बहुत से शास्त्रों को संग्रह करने की क्या आवश्यकता है। केवल गीता का ही मान करना चाहिए। क्योंकि वह स्वयं भगवान पद्मनाभ (विष्णु) के मुँह से निकली है।

इसलिए हमारा कहना है कि गीता कोई प्रमाणिक शास्त्र या ग्रन्थ नहीं है। उसमें पहिले भी काफी काट छाँट होती रही है। आज भी बुद्धिमानों को अधिकार है कि उसकी बुद्धि विरुद्ध, अवैदिक अवतार, बाद की प्रचारक बातों वा श्लोकों को अमान्य घोषित कर देवें। गीता कोई ऐतिहासिक घटना नहीं है, न अर्जुन जैसे शूरवीर को दुश्मन को सामने देखकर खून खौलने के स्थान पर मोह होकर धर्म भीरु बनकर पसीना आना सम्भव था और न असामयिक, उस समय व्यर्थ की बातों का जो ७०० श्लोकों में निबद्ध हो सकी है, कहने या शंका समाधान करने का अवसर तथा औचित्य ही था। यह सब कुछ कलाकारों ने कृष्ण को पूर्ण अवतार बनाने के लिए लिख मारा था।

गीता के अध्याय १८ में श्लोक ६३ से ७२ तक के श्लोक तो गीता में खुले प्रक्षेप सिद्ध हैं जिनमें श्रीकृष्ण जी गीता का महात्म्य स्वयं घोषित कर रहे हैं जब कि पौराणिकों के अनुसार कृष्ण अर्जुन सम्बाद केवल कुछ शंका समाधान ही था । न तो उस समय उसका टेपरिकार्ड ही किया गया था और न वह पहिले से ही लिख कर तैयार कर रखा गया था, न उस सम्वाद को करते समय यह उद्देश्य ही दोनों का था कि हमारी बातों की किताब बनाई जावेगी और उसका नाम गीता रखा जावेगा तथा लोग उसे पढ़ा करेंगे ।

यह पूरा विवरण गीता की वास्तविकता खोल देता है । गीता जब बनाकर तैयार करली गई तो सोचा गया कि इसका महात्म्य भी लिख दिया जावे । तो मूर्ख लेखकों को यही सूझा कि महात्म्य भी श्री कृष्ण जी से ही कहल वाया जावे तो लोग ज्यादा प्रभावित होंगे । और वही बेवकूफी वे लोग कर बैठे । श्रीकृष्ण जी से ही गीता का महात्म्य लिखवा दिया गया । यदि यह महात्म्य संजय लिखता या व्यास जी की ओर से लिखवा दिया गया होता तो गीता की यह पोल पकड़ में नहीं आती ।

लगता है गीता कारों को वैदिक सिद्धान्त का भी पूर्ण ज्ञान नहीं था । वह गीता अ २ ये जीवात्मा को अजर अमर बता रहा है, पुनर्ज न्म लेने के लिये यन्त्र–तन्त्र उसके आने जाने का समर्थन भी करता है, पुराने वस्त्र बदल कर नये धारण करने के समान शरीर का बदलना मानता है जीवात्मा को एक देशीय सत्ता भी मानता है । पर अपनी अज्ञानता वश अ २ श्लोक" में जीवात्मा को

'नित्यः सर्व गतः स्थाणु अचलोऽयंसनातनः' गी०२/२३।

भी लिख देता है । इस श्लोक में उसने जीवात्मा को नित्य (सर्वगत) सर्वव्यापक एक स्थान पर वृक्ष के समान स्थिर रहने वाला अचल तथा सनातन भी लिख बैठा है जो उसकी परस्पर विरोधी बात है । जीवात्मा कभी पैदा नहीं हुआ, यह सनातन अनादि है वह तो ठीक है पर एक देशीय होने से सर्वव्यापक नहीं है, स्थाणु तथा अचल भी नहीं है । यह लक्षण केवल परमात्मा के हैं जो सर्वव्यापक अचल सत्ता है । गीताकार का यह श्लोक गलत है अथवा खुला प्रक्षेप है, उसकी अज्ञानता का दयोतक हैं ।

इसी प्रकार गीता अ० १५ श्लोक ७ में गीता कार लिखता है—

"ममैवांशो जीवलोके जीवभूत सनातन,"

इसमें जीवात्मा को अपना (परमात्मा) अंश (टुकड़ा या खण्ड) लिख बैठा है। अंश या खण्ड कभी अपने पूर्ण में शामिल होता है। उसे कभी काटकर प्रथक किया जाता है। तो जबसे वह पूर्ण में से प्रथक होता है तभी से उसकी आयु निश्चित हो जाती है। तो जो पैदा होता है वह कभी नष्ट भी होता है। जीव को ईश्वर अंश मानने पर वह अनादि सत्ता नहीं रह जाता है। जब कि आ २ में जीवात्मा को नित्य सत्ता स्वीकार किया गया है।

गीताकार भंग के नशे में यह श्लोक बनाकर अपनी ही स्थापना का खण्डन कर बैठा है।

इसी प्रकार के गीता में बहुत से ऐसे स्थल है जो परस्पर विरुद्ध-वैदिक धर्म के सिद्धान्तों के विरुद्ध हैं। हम गीता को प्रमाणिक नहीं मानते। गीता में अवतार लेने के तीन हेतु दिये गये हैं—

साधुओं की रक्षा, दुष्टों का विनाश तथा धर्म की स्थापना। श्री कृष्णजी महाराज ने इनमें से एक भी काम पूरा नहीं किया था। परमात्मा का कार्य क्षेत्र एक जिला नगर प्रान्त अथवा देश नहीं होता है। उसका क्षेत्र सात संसार होता है। उसकी कृपा प्राणी मात्र पर होती है। श्रीकृष्ण जी के समय में भी दुष्ट थे। उनके बाद भी वे रहे, भारत में ही नहीं सारे संसार मैं रहे। साधुओं सज्जनों की रक्षा करने वे कहीं भी नहीं गये और न वे धर्म प्रचारार्थ ही कहीं गये थे। वे केवल अपने वंश के शत्रुओं से अपने रिश्तेदार पाण्डवों के त्रुशओं से जूझते रहे थे।

पाण्डव कौरव भाई-भाई थे। सम्पत्ति का झगड़ा था जिसके अनेक कारण बने थे। अर्जुन श्रीकृष्ण का खास बहिनोई था अतः उस युद्ध में उनको विवश होकर उसका पक्ष लेना था तो उन्होंने लिया था और वह विजयी हुआ था। तो इस पारिवारिक संघर्ष में युद्ध में रिश्तेदार को बिजयी बना देने से तो "परित्राणाय साधूनां बिनाशाय यदुष्कृताय तथा धर्म स्थापनाथार्थ" की प्रतिज्ञा तो पूरी नहीं होनी है। हां यदि अर्जुन से पारिवारिक या रिश्तेदारी का सम्बन्ध न होता और वे अपनी शक्ति से सारे भारत में दुष्ट दमनादि कार्य करते तथा

धर्म मार्ग जनता को बताते तब तो उनके लिये प्रेम की बात होती, पर वे वैसा न कर सके।

उस प्रकार गीता की आधार शिला अवतार बाद की गलत प्रमाणित है। जब कोई आगे ऐसा व्यक्ति आवेगा जो तीनों काम करके दिखावेगे, तो उसे उसी कसौटी पर कसने के बाद अवतार मान लिया जावेगा केवल कृष्णजी ही नहीं आज तक संसार के इतिहास में किसी ने भी ये तीन काम करके नहीं दिखाये अतः आज तक कोई भी व्यक्ति अवतार हुआ ही नहीं, यह भी इससे सावित है। गीता ने अवतारों को जाँचने को यह कसौटी बनादी है जिसे याद रखना चाहिये। इसी पर झूठे सच्चे अवतारों की परीक्षा करनी चाहिये।

श्रीकृष्ण जी ने अपने को जगत का माता-पिता घोषित किया है।

"पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः।" गीता ९/१ ॥

संसार के माता-पिता जगत के उत्पत्ति कर्ता अपने को घोषित करने वाले कृष्ण जी एक मामूली जंगली बहेलिये के पैर में बाण लगने से मर कैसे गये ? वह बाण उनसे दूर क्यों नहीं गिर पड़ा था ? वे अपनी भी रक्षा नहीं कर सके तो ईश्वर कैसे थे ?

गीता के अनुसार विपक्षी गर्ग तो बनियां होने से घोर पापयोनि वाला निकाला है। गीता ने—

"मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परांगतिम्॥ गीता १८३२

इस श्लोक में गीता में श्रीकृष्ण जी ने स्त्री वैश्या तथा शूदादि को पापयोनि वाला माना है। विपक्षी गर्ग कैसा धूर्ताचार्य है जो पापयोनि में एक पापयोनि वाली वैश्या स्त्री से पैदा हुआ है और फिर भी गीता की प्रशंसा करता है जो इस पर जूते लगाती है। उस कीसारी बनियां कौम को ही पापी घोषित करने वाली पुस्तक गीता को तो छूना भी नहीं चाहिये। शूद्र वर्ण तथा नारी जाति को इस भ्रष्ट बात को कहने वाली पुस्तक का वहिष्कार कर देना चाहिये। नारी यदि पाप योनि है तो उससे जन्मने वाली सारी मनुष्य जाति ही पापयोनि होनी चाहिये। वैश्यों की पापयोनि में जन्म लेने के ही कारण

तो यह पापी स्वामी दयानन्द जी को गालियां देता है। इसलिये इसके संस्कार नीच हैं। लोक में भी इस जैसे धूर्त को देखकर लोग उससे कह देते हैं कि तू किस नीच कुल की मां की कोख से पैदा हुआ है या तू किस नालायक के गन्दे वीर्य की औलाद है जो महा पुरुषों या लोगों को गन्दी गालियां देने बैठा है। मेरठ के लोगों को इस धूर्त गर्ग से भी यही प्रश्न करना चाहिये।

इस गर्ग ने गीता स्वरूप निर्णय के अन्तिम पृष्ठ पर व नोटिसों में इस पुस्तक गी० स्व नि का उत्तर देने का चैलेन्ज दिया है और ५००) का इनाम भी घोषित किया है। उसकी सारी पुस्तक झूठी हैं। जब तक वह महा भारत द्वारा घोषित ७४५ श्लोकों वाली पूरी गीता पेश नहीं करता है, हम वर्तमान ७०० श्लोकों वाली गीता को गलत घोषित करते है। यही उसके चैलेन्ज व उसकी गीता का एक लुस्त उत्तर है।

नोट—७० श्लोकी गीता पं० मधुसूदन जी ने छापी थी।

हमने इसकी दो गन्दी पुस्तकें दयानन्द गाली पुराण व गीता स्वरूप निर्णय देखी हैं। दोनों ही स्वामी जी को गालियां देने को लिखी गई हैं। गीता स्वरूप निर्णय में वह गीता को सही साबित करने के लिये गीता के ही प्रमाण दे बैठा है। गीता की प्रमाणिकता ही जन विवादास्पद है, तो उस साध्य में से उसी की प्रमाणिकता के लिये प्रमाण देना उसकी मूर्खता की पराकाष्ठ है। ऐसा पागलपन कभी किसी भी विद्वान ने नहीं किया है। गीता स्वरूप निर्णय के प्रारम्भ में इसने ब्राह्मण ग्रन्थों के वेद होने पर एक लेख लिखा है, जबकि इस विषय का गीता से कोई सम्बन्ध नहीं है। गीता पर ही पुस्तक होनी चाहिये थी। प्रथम विषय पर प्रथक पुस्तक सामने आनी थी। स्वामी दयानन्द जी ने न तो गीता का कहीं खण्डन किया है और न कहीं मन्डन किया है। तब उनको बलात गालियां क्यों दी गई है। यही इसकी धूर्तता व लुफ्ते हराम होने का प्रमाण है। बिच्छू-बिच्छू की औलाद होती है गुन्डा गुन्डे बाप की प्रति मूर्ति होता है। गर्ग में भी अपने बाप के अवगुण कूट-कूट कर भरे हैं। जैसा बाप होगा वैसा ही यह नालायक उसका बेटा होगा।

वर्तमान गीता में पचासों श्लोक अन्य शास्त्रों के लेकर कहीं भाषा बदल कर कहीं ज्यों के त्यों चोरी करके जोड़े गये है ताकि

उसकी प्रमाणिकता साबित हो जावे। उसके निर्माण कर्ताओं ने श्री कृष्ण को परमात्मा बनाने की धुन में बेशुमार ऊँट पटाँग श्लोक भी उससे घुसेड़ दिये है जो उस समय अनावश्यक थे। गीता एक कल्पित उपाख्यान भीष्म पर्व में है जो अर्जुन के वीरत्व पर कलंक है शत्रु को सामने देखकर बीरों का खून खौलता है पर गीता ने अर्जुन को छिनड़ा बता दिया है।

गीता की वास्तविकता देखने के लिये पाठक हमारी गीता विवेचन' पुस्तक पढ़ सकेंगे जिसमें उसका पूरा पर्दा फ़ाश दिया गया है।

ब्राह्मण ग्रन्थों के वेद प्रमाण पर विपक्षी ने जो बकबास की है उसमें कुछ भी सार की बात नहीं है। इस विषय पर आर्य समाज कानपुर में आर्य विद्वानों तथा स्वामी करपात्री जी व अन्य पं. गिरधर शर्मा आदि कई पौराणिक विद्वानों के मध्य लेख बद्ध शास्त्रार्थ हो चुका है जिसमें पौराणिक पक्ष ब्राह्मणों को वेद सावित नहीं कर सका था तथा आर्य समाज की विजय हुई थी। यह शास्त्रार्थ पुस्तककार 'वेद संज्ञा-विमर्श' नाम से सन् ६० में छप भी चुका था। विपक्षी ने वही बेकार बातें फिर लिख मारी हैं।

श्री पं युधिष्ठिर जी मीमांसक द्वारा दो पुस्तकें 'मन्त्र ब्राह्मणा-योर्वेद नामधेयम् इत्यत्र कश्चिद् अभिनवो विचारः।' तथा 'वेद संज्ञा मीमांसा' नाम की छप चुकी है जो रामलाल कपूर ट्रस्ट से मिलती है। इनके अकाट्य प्रमाणों तथा तर्कों का उत्तर में आज तक भी भारत भर के सनातनी पंडितों में से कोई कलम उठाने का साहस नहीं कर सका है।

यह मूर्ख तो अपनी किताब गीता स्वरूप निर्णय में गीता को भी वेद लिख बैठा है। कल को कुरान को भी वेद मानने लगेगा। ऐसा धूर्तराज गुण्डा सन तनी ही हो सकता है जो परमात्मा की वाणी वेद को भी कलंकित करना चाहता है।

विपक्षी ने मूर्खतावश निमोग सिद्धान्त पर कटाक्ष किया है जो मनुस्मृति आदि उसके धर्म शास्त्रों से समर्थित है। देखो मणुस्मृति अध्याय ९ श्लोक ५९ से ६४ तक। इसमें नियोग का विधान व प्रकार

भी दिया गया है। राजा पाण्डु के नपुंसक होने पर महारानी कुन्ती ने ६ व्यक्तियों से नियोग कराकर ६ पांडवों को जन्म दिया था जिनके जन्म को इसके भगवान श्रीकृष्ण जी ने अत्यन्त पवित्र मानकर अपनी बहिन सुभद्रा का विवाह भी अर्जुन के साथ किया था जो स्वयं नियोग से उत्पन्न था। यह प्रथा महाभारत काल में भी चालू थी। क्या कुत्ता गर्ग साहस रखता है कि पांचों पांडवों को तथा विशेष कर भी कृष्णावतार के खास बहिनोई अर्जुन को हरामी लिख सके। तूने कुरान को अपौरुषेय द० गा० पु० पृ० ३६ पंक्ति ४ में घोषित किया है। तब तो तू उसकी ईश्वरीय व्यवस्था को भी ठीक मानता होगा। देख कुरान पारा २ सूरवे बकर आयत रुकु २६ अ० २३० में लिखा है कि औरत को जब तीसरी तलाक दे दी जावे और उसके बाद पति पत्नी फिर मिलकर एक हो जाना चाहें तो पति उसे नहीं ले सकता है। हां यदि औरत तलाक के बाद किसी अन्य मर्द से निकाह करके उससे सम्भोग कराकर फिर उसे तलाक देकर आवे तो वह पहिले पति के साथ फिर रह सकती है। पर अगर वह दूसरे पति से बिना सम्भोग कराए आवेगी तो प्रथम पति को स्वीकार नहीं होगी।

दूसरे पति से सम्भोग कराके आने से उसमें क्या जायका बढ़ जाता है यह तो मुसलमान लोग तथा उनका मूर्ख वकील 'गर्ग' ही जानता होगा। पर यह प्रथा इस्लाम में चालू है और बुरी नहीं मानी जाती है। इसी तरह महाभारत काल तथा नियोग प्रथा वंश संचलानार्थ आपत्ति कालिक धर्म के रूप में सन्तान वृद्धि के लिए, व्यभिचार से बचने के लिए धार्मिक रूप में स्वीकृति थी। मेरठ के लोग कहते हैं कि गुण्डा कामी गर्ग का भी जन्म इसी नियोग प्रथा से हुआ था।

पौराणिक पंडितों ने हिंदुओं को, मौलवियों ने मुसलमानों

को, पादरियों ने ईसाइयों को, जैन पण्डितों ने जैनियों को, बुद्ध बुद्धओं को धर्म के नाम पर किताबें लिख २ कर खूब बेवकूफ बनाया है। अतः इन सभी सम्प्रदायों का पोस्टमार्टम करके स्वामी दयानन्द जी ने सब की आंखें पाखण्डों के प्रति खोलकर बड़ा कार्य किया था। विपक्षी तो धूर्त है जो उनको गालियाँ देने बैठा है जबकि वह आर्य समाज की एक भी मान्य बात काट नहीं सका है—

नियोग पर हमारी पुस्तक 'सनातन धर्म में नियोग व्यवस्था' पढ़ कर अपनी मुर्खता का परिमार्जन कर सकेगा।

गीता स्व० नि० में कोरी बकबास भरी है जिसका खण्डन कोई भी आर्य समाज का चपरासी आसानी से कर सकता है। इस समय हमारा उद्देश्य द० गा० पुराण का उत्तर देना है; वह दिया गया है। सक्षेप में गीता के कल्पित उपाख्यान होने की स्थिति स्पष्ट रही है। हम यहाँ गी० स्व० नी० पर विस्तार से इसलिए नहीं लिख रहे हैं। क्योंकि उससे यह पुस्तक अ कार में बहुत बढ़ जावेगी। किसी अन्य पुस्तक में उसके सभी पाखण्डों का खण्डन कर दिया जावेगा। साथ ही ब्राह्मण ग्रन्थों के वेदत्व पर भी विस्तार से लिख दिया जावेगा।

इस पुस्तक में हमको विपक्षी के लिए उसके द्वारा स्वामी दयानन्द जी के लिए लिखी गई गालियों के उत्तर में अनेक स्थानों पर कटु शब्दों का प्रयोग करना पड़ा है। वह सभी कुछ 'गर्ग' द्वारा अपने को गुण्डा चरित्रहीन, कामी, आदि दुराचारों में ग्रस्त होने की स्वीकारोक्ति के कारण इसकी असलियत को ध्यान में रखकर किया गया है। जैसे को तैसा कहना, उसी के स्वरूप को विस्तार से सामने रखना ऐसे ही गलत नहीं होता है जैसे अन्धे, काने, चोर, व्यभिचारी को उसीनाम से सम्बोधित करना पाप नहीं होता है।

गुरु विरजानन्द ...
सन्दर्भ पुस्तकालय
पुस्तक परिग्रहण क्रमांक 799 ...
दयानन्द महिला मह...

गीता के अनुसार किसी गर्ग वैश्य को औरत वेश्या की किसी पाप योनि (गन्दी योनि) से जन्मे इस नालायक ने अपनी गन्दी किताब 'गीता स्वरूप निर्णय' में समस्त जाट कौम को गालियां दी हैं। जैसे गुण्डागर्दी शब्द किसी के लिए कहना पाप है, वैसे जाट जाति के लिए 'जाटगर्दी' शब्द पृ० x x vii पर पंक्ति ८ में गाली की भावना से लिखकर जाटों का अपमान किया है। यदि किसी जाट में मेरठ में कौमी स्वाभिमान हो तो इसकी मिरगी जूता सुंघा कर उतार देवे। जिससे यह लोफर सभ्यता से लिखना सीख सके।

हम चाहते हैं कि धर्मिक शास्त्रार्थ के क्षेत्र में कोई सुशिक्षित विद्वान अथवा सभ्य ब्राह्मण सामने आता तो टकराने में आनन्द आता तथा पाठकों को ज्ञान आनन्द कुछ मिलता, पर लगता है सनातन धर्म में विद्वान अब मौन हो गये हैं और गर्ग जैसे उल्लूओं ने उनका स्थान ले लिया है। जो कुरान व बाइवल का भी समर्थक है जबकि इसने उनको कभी देखा तक नहीं है। इस पुस्तक को लिखने में हमारी कोई रुचि नहीं थी, पर जबाब देने मात्र के लिए इसे लिखा गया है ताकि जनता इस लोफर की कमीनी पुस्तकों के प्रभाव में न आ सके। और इसके द्वारा समर्थित गलत मतों की वास्तविक स्थिति को जान जावे।

विपक्षी गर्ग कितना धूर्त है यह उसी से पता लगता है कि उसने अपनी किताब 'गीता स्व० निर्णय' का जबाब देने वाले को ५००) रुपये इनाम की घोषणा छापी है। जब कि किताबें छापने के लिए वह किसी भामाशाह की तलाश कर रहा है। जो इसे छपाई व पेट भरने के लिए भीख डाल सके।

खण्डन-मण्डन ग्रन्थमाला के ग्रन्थों की सूची

मेरठ की जंगली कुत्ता (गर्ग)	३.७५	अण्डा और मांस में विष	.२०
कुरान की छानबीन	७.५०	तुलसी और शालिगराम	.५०
कुरान प्रकाश	६.००	चोटी २० पैसे, जनेऊ ६० पैसे	
गीता विवेचन	७.००	कुरान की विचारणीय बातें	.६०
भागवत समीक्षा	७.००	पुराणों के कृष्ण	१.००
बाइबिल दर्पण	४.५०	शिव जी के चार विलक्षण बेटे	१.००
कुरान पर १७६ प्रश्न	३.००	मृतक श्राद्ध खण्डन	.७५
कुरान दिग्दर्शन	६.५०	विभिन्न मतों में ईश्वर	.६५
असत्य पर सत्य की विजय	३.५०	गीता पर ४२ प्रश्न	.६५
ईश्वर सिद्धि	५.००	शास्त्रार्थ के चेलेंज का उत्तर	.७५
वैदिक यज्ञ विज्ञान	३.००	पौराणिक कीर्तन पाखण्ड है	.७५
जैन मत समीक्षा	३.५०	बाइबिल पर सप्रमाण ३१ प्रश्न	.५५
मुनि समाज मुखमर्दन	२.५०	अर्थ सहित वैदिक संध्या	.७
अवतार रहस्य	३.५०	सनातन धर्म में नियोग व्यवस्था	.७
मूर्ति पूजा खण्डन	३.५०	नारी पर मजहबी अत्याचार	.५
टोंक का शास्त्रार्थ	३.५०	हँसामत का पोल खाता	.५०
माता पुत्री का सम्वाद	२.५०	पौराणिक मुख चपेटिका	.५०
भारतीय शिष्टाचार	२.५०	दुर्गा पर नरबलि	.५०
शिवलिंग पूजा क्यों ?	४.२५	स्वर्ग विवेचन	.५५
अद्वैतवाद मीमांसा	२.५०	हनुमान जी बन्दर नहीं थे	.५०
प्रार्थना भजन भास्कर	२.५०	बौद्धमत का भण्डाफोड़	३.००
यजुर्वेद अ० ४० सव्याख्या	२.५०	शैतान की कहानी	.५०
यजुर्वेद अ० ३१ सव्याख्या	१.५०	कुरान में परस्पर विरोधी स्थल	.२०
वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है	२.००	खुदा का रोजनामचा	.२०
पुरुष किसने बनाये ?	३.००	नृसिंह अवतार वध	.३०
माधवाचार्य को डबल उत्तर	२.२५	संसार के पौराणिकों से ३१ प्र.	.२५
पौराणिक गप्प दीपिका	१.६०	अवतारवाद पर ३१ प्रश्न	.२०
इस्लाम दर्शन	१.५०	ईसा मुक्तिदाता नहीं था	.२०
कबीर मत गर्व मर्दन	२.००	ईसा और मरियम	.२०
ब्रह्माकुमारी मत खण्डन	१.००	मूर्ति पूजा पर ३१ प्रश्न	.२०
मौलवी हार गया	२.५०	ईसाई मत का पोलखाता	.२०
स. प्र. की छीछालेदर का उत्तर	१.००	तम्बाकू में विष, अण्डा में विष	.२०
महान पुरुष कैसे बनते हैं	२.००		
सव्याख्या विवाह पद्धति	२.५०		

पुत्रवटी जिनके कन्या ही होती हों, पुत्रवटी के सेवनसे पुत्र होगा। मू० ३१)

पता—वैदिक साहित्य प्रकाशन, कासगंज (एटा) उ० प्र० भारतवर्ष